अंतरा भाग–2 पद्य खण्ड

1. जयशंकर प्रसाद (देवसेना का गीत/कॉर्नेलिया का गीत)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

(i) देवसेना का गीत प्रसाद के कौनसे नाटक से लिया गया है?

(अ) चन्द्रगुप्त (ब) अजातशत्रु (स) राजश्री (द) स्कन्दगुप्त (द)

(ii) देवसेना कौन थी?

(अ) मालवा के शासक बंधुवर्मा की बहन (ब) कार्नेलिया की बहन

(स) धनकुबेर की कन्या (द) पर्णदत्त की बहन (अ)

(iii) देवसेना की वेदना का मूल कारण क्या है?

(अ) अत्यधिक गरीब होना (ब) पर्णदत के साथ भीख माँगना

(स) स्कंदगुप्त का प्रेम नही मिलना (द) बीमार होना (स)

(iv) देवसेना स्कन्द्रगुप्त से प्रेम करती थी पर स्कन्दगुप्त किसका स्वप्न देखते थे?

(अ) जयमाला (ब) कमला (स) विजया (द) मालिनी (स)

(v) किसके आक्रमण से आर्यावर्त संकट में हैं?

(अ) शक (ब) कुषाण (स) सिकंदर (द) हुण (द)

(vi) "हृदय की कोमल कल्पना सोजा!" किसने कहा?

(अ) कार्नेलिया (ब) देवसेना (स) विजया (द) महादेवी (ब)

(vii) कार्नेलिया का गीत कहाँ से लिया गया है?

(अ) राजश्री नाटक (ब) चन्द्रगुप्त नाटक

(स) स्कन्दगुप्त नाटक (द) अजातशत्रु नाटक (ब)

(viii) सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस की बेटी का नाम था –

(अ) कार्नेलिया (ब) देवसेना (स) विजया (द) जयमाला (अ)

(ix) 'अरुण यह मधुमय देश हमारा' पंक्ति में किस देश की महिमा का वर्णन किया गया है?

(अ) भारत (ब) श्रीलंका (स) बाग्लादेश (द) चीन (अ)

(x) भारतभूमि की महिमा, गौरव और प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन प्रसाद के किस गीत में किया गया है?

(अ) देवसेना का गीत (ब) कार्नेलिया का गीत

(स) इन दोनों में (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

(xi) कवि ने आशा को बावली क्यों कहा है?

शब्दावली मिशन–100

उत्तर – आशा व्यक्ति को भ्रमित कर देती है। उसे बावला बना देती है। प्रेम में प्रेमी विवेकहीन हो जाते हैं। प्रेम अन्धा होता है। देवसेना स्कन्दगुप्त के प्रेम में बावली हो गई थी। उसने बिना सोचे समझे स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और यह आशा मन में पाली कि स्कन्दगुप्त उसे अपना लेगा। उसकी आशा उसके मन का पागलपन ही था। वह स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी।

(xii) 'देवसेना का गीत' कविता में देवसेना की 'हार या निराशा' के क्या कारण हैं?

उत्तर– देवसेना की हार या निराशा के कई कारण थे जिनमें दो कारण प्रमुख थे। सर्वप्रथम हूणों के आक्रमण से देवसेना के भाई बन्धुवर्मा सहित पूरा परिवार वीरगति को प्राप्त हुआ। दूसरा कारण यह है कि वह स्कन्दगुप्त को पाना चाहती थी परन्तु पा न सकी क्यों कि स्कन्दगुप्त विजया से प्रेम करता था । जब स्कन्दगुप्त ने उससे प्रेम याचना की तब वह तैयार नहीं हुई क्यों कि वह आजीवन अविवाहित रहने का व्रत ले चुकी थी। इस प्रकार वह जीवन से हार कर निराश हो गई थी।

(xiii) भारत की किन–किन विशेषताओं को 'कार्नेलिया का गीत' कविता में चित्रित किया गया है?

उत्तर– प्रस्तुत गीत में प्रसाद जी ने भारत के प्राकृतिक सौंदर्य एवं सांस्कृतिक महत्व का वर्णन किया है। प्रातःकालीन सूर्य की किरणें जब भारत की धरती पर पड़ती है तब प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। उस समय प्रकृति मधुमय होती है। यहाँ दूर देशों से आने वाले व्यक्तियों को आश्रय मिलता है। यहाँ के लोग दयालु, करुणाशील, संवेदनशील है जो सभी के प्रति सहानुभूति रखते हैं। भारत में विविध सभ्यता– संस्कृति, रंग रूप, आचार–विचार एवं धर्म वाले प्राणियों के साथ समानता का व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार कवि ने इस कविता में भारत की अनेक विशेषताओं को चित्रित किया है।

(xiv) जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– जयशंकर प्रसाद का जन्म 1889 ई. में काशी के सुंघनी साहू नाम से प्रसिद्ध परिवार में हुआ। प्रसाद जी जन्मजात प्रतिभाशाली साहित्यकार थे। वे छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। प्रसाद जी भारतीय संस्कृति से प्रभावित ऐसे महाकवि थे जिन्होने अपनी रचनाओं में भारत भूमि की महिमा व राष्ट्रीय जागरण का स्वर व्यस्त किया। जयशंकर प्रसाद कवि, नाटककार, उपन्यासकार, कहानीकार तथा निबंधकार है। उनकी रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(आँसू, झरना, लहर, कामायनी, कानन कुसुम (काव्य संग्रह) अजातशत्रु, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी (नाटक) आँधी, इंद्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि, आकाशदीप (कहानी संग्रह), कंकाल, तितली इरावती (अपूर्ण) (उपन्यास) काव्य और कला तथा अन्य निबंध (निबंध संग्रह)।

(xv) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

छलछल थे संध्या के श्रमकण
आँसू–से गिरते थे प्रतिक्षण
मेरी यात्रा पर लेती थी–
नीरवता अनंत अंगड़ाई।

श्रमित स्वप्न की मधुमाया में,
गहन – विपिन की तरू छाया में,

राधाकाली मिशन-100

पथिक उनींदी श्रुति में किसने–

यह विहाग की तान उठाई।

प्रसंग–

यह पद्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'स्कन्दगुप्त' नाटक से लिया गया है। कवि ने इस काव्यांश में देवसेना के असफल प्रेम से सम्बन्धित मनोभावों व देवसेना के हृदय की पीड़ा का वर्णन किया है।

व्याख्या–

देवसेना जीवन के अंतिम समय में वेदना का अनुभव करते हुए सोचती है कि जीवन की संध्या बेला अर्थात् जीवन के अंतिम पड़ाव में श्रम करने से उत्पन्न हुई पसीने की बूँदे आँसू की तरह हर क्षण गिरती रहती है। मेरी यात्रा पर अंतहीन खामोशी अँगड़ाई लेती है अर्थात देवसेना का समस्त जीवन दुखों से भरा रहा। वह जीवन भर जिस सुख की कामना करती रही, यह उसे प्राप्त नहीं हो सका। उसे आँसुओं के अतिरिक्त कुछ न मिला।

प्रसाद जी वर्णन करते हैं। के जिस प्रकार कोई पथिक थककर पेड़ की छाया में विश्राम कर रहा हो और उसे उनींदी दशा में कोई मधुर राग सुनाई पड़ जाए। देवसेना को स्कंदगुप्त का प्रणय निवेदन भी ऐसे ही विहाग–राग के समान प्रतीत हुआ। भाव यह है कि जीवन भर संघर्ष करती रही देवसेना सुख की आकांक्षा के मीठे सपने देखती रही, पर वे पूरे न हो सके। अब वह थककर निराश होकर इन सबसे विदाई लेती है। अब उसे कोई गीत सुख नहीं पहुंचा सकता।

विशेष –

(1) इन पंक्तियों में देवसेना की वेदना और अन्तर्द्वन्द्व साकार हो उठा है।

(2) 'छलछल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, 'आँसू–से गिरते' में उपमा अलंकार 'नीरवता' में मानवीकरण व 'श्रमित–स्वप्न' में अनुप्रास अलंकार का प्रयोग द्रष्टव्य है।

(3) भाषा में चित्रात्मकता व संगीतात्मकता का गुण है।

(4) करुण रस, प्रसाद गुण व कविता मुक्त छंद में है।

(xvi) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

लघु सुरधनु से पंख पसारे – शीतल मलयसमीर सहारे।

उड़ते खग जिस ओर मुँह किए – समझ नीड़ निज प्यारा।

बरसाती आँखों के बादल – बनते जहाँ भरे करुणा जल।

लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।

हेमकुंभ ले ऊषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे।

मदिर उँघते रहते जब – जगकर रजनी भर तारा।

प्रसंग – यह काव्यांश जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित 'चन्द्रगुप्त' नाटक के 'कार्नेलिया का गीत' से लिया गया है। इन पंक्तियों में कार्नेलिया द्वारा भारतदेश की महिमा का मनोहारी वर्णन किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

व्याख्या –

प्रसाद जी वर्णन करते है कि कार्नेलिया गा रही है कि यहाँ मलय पर्वत से प्रातःकाल शीतल, सुगंधित मन्द हवा चलती है। यहाँ पक्षी भी छोटे इन्द्रधनुषों के समान अपने पंखों को फैलाकर भारत की ओर अपने प्यारे घोंसलों की कल्पना करके उड़ते हैं। वर्षा ऋतु में जब बादल बरसते हैं तो ऐसे लगता है जैसे यहाँ के लोगों की आँखों से करुणा जल बरस रहा है। विशाल सागर की लहरों को भारत देश के किनारों से टकराने के बाद ही विश्राम मिलता है। प्रातःकालीन उषा का जब आगमन होता है तो ऐसे लगती है मानों सूर्य रूपी स्वर्ण कलश लेकर सुख बिखेर रही हो। रातभर जागने के बाद तारागण मंदिर की भाँति ऊँघते हुए से प्रतीत होते हैं।

विशेष –

(1) भारत की सांस्कृतिक महिमा, देशभक्ति, मानवीय करुणा व अतिथि–परायणता आदि विशेषताओं को उजागर किया गया है।

(2) कविता में संगीतात्मकता एवं दृश्य बिम्ब का प्रयोग किया गया है।

(3) शांत रस व कविता मुक्त छंद में है।

(4) तत्सम प्रधान खड़ी बोली एवं शैली छायावादी है।

(5) 'लघु सुरधनु से' में उपमा अलंकार, 'बनते जहाँ करुणा जल; व 'हेमकुंभ' में रूपक अलंकार है।

(6) अनेक जगह उनुप्रास अलंकार एवं अंतिम पंक्तियों में मानवीकरण अलंकार है।

2. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'–(सरोज स्मृति)

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–</u>

(i) आकाश बदलकर बना 'मही' पंक्ति में 'मही' का शाब्दिक अर्थ है–

(अ) अन्तरिक्ष (ब) चन्द्रमा (स) पृथ्वी (द) नदी (स)

(ii) निराला अपनी पुत्री की तुलना किससे करते हैं?

(अ) राधा से (ब) सीता से (स) रुक्मणी से (द) शकुन्तला से (द)

(iii) मुक्तछंद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं–

(अ) निराला (ब) जयशंकर प्रसाद (स) अज्ञेय (द) रघुवीर सहाय (अ)

(iv) 'हों भ्रष्ट शीत के–से शतदल' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार का नाम है–

(अ) श्लेष (ब) यमक (स) रूपक (द) उपमा (द)

(v) कवि निराला अपनी पुत्री का तर्पण करते हैं–

(अ) जल अर्पित करके (ब) गत कर्मों को अर्पित करके

(स) तिल मिश्रित सामग्री (द) उपर्युक्त सभी (ब)

(vi) 'सरोज स्मृति कैसा गीत है?

(अ) शोकगीत (ब) विवाह गीत (स) उपर्युक्त दोनों (इ) इनमें से कोई नहीं (अ)

शेखावाटी मिशन–100

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

(vii) "दुःख ही जीवन की कथा रही,

क्या कहूँ आज जो नहीं कही।

उपर्युक्त पंक्तियों के आधार पर कवि के हृदय की पीड़ा का वर्णन कीजिए।

उत्तर– कवि निराला के स्वजनों का एक–एक करके निधन हो गया था अन्त में पुत्री सरोज के निधन ने उनको अन्दर तक झकझोर दिया था। इस प्रकार निराला ने दुःख एवं मृत्यु का प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया था इसलिए उस दुःख गाथा को इस कहानी में गाया है जिसको आज तक किसी से नहीं कहा। इन पंक्तियों में कवि की गहरी वेदना छिपी है जिसे शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता।

(viii) सरोज का विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर– सरोज का विवाह एक सामान्य विवाह था। उसमें किसी प्रकार का आन्तरिक व बाह्य प्रदर्शन नहीं था। विवाह में निराला ने किसी को निमंत्रण नहीं भेजा था केवल कुछ स्वजन ही विवाह में उपस्थित थे। विवाह के समय गाये जाने वाले गीत भी नहीं गाये गये। शांत एवं प्यारा सा, मौन वातावरण था। नव–वधू को माँ द्वारा दी जाने वाली कुल शिक्षा पिता ने ही दी और पुष्प सेज भी स्वयं निराला ने ही सजाई। इस प्रकार सरोज का विवाह अन्य विवाहों से भिन्न था।

(ix) 'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली' पंक्ति के माध्यम से किस प्रसंग को उद्घाटित किया गया है।

उत्तर– कवि ने सरोज की माता को लता और सरोज को कली बताया है। सरोज की माता को अपने मायके में सुख मिला था और सरोज को भी अपनी नानी के घर स्नेह मिला।

पंक्ति से एक भाव यह भी प्रकट होता है कि सरोज का ननिहाल लता है और सरोज कली है, क्योंकि सरोज बचपन से वहीं रही और वहीं बड़ी हुई।

निबन्धात्मक प्रश्नः–

(x) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

देखा विवाह आमूल नवल,

तुझ पर शुभ घड़ा कलश का जल।

देखती मुझे तू हँसी मंद,

होठों में बिजली फँसी स्पंद

उर में भर झूली छवि सुंदर

प्रिय की अशब्द शृंगार–मुखर

तू खुली एक–उच्छ्वास – संग

विश्वास – स्तब्ध बँध अंग–अंग

नत नयनों से आलोक उत्तर

काँपा अधरों पर थर–थर–थर ।

शेखावाटी मिशन–100

देखा मैंने वह मूर्ति–धीति

मेरे वसंत की प्रथम गीति –

संदर्भ–यह पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अन्तरा भाग–2 में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता 'सरोज–स्मृति' से लिया गया है।

प्रसंग– यह कविता पुत्री सरोज की मृत्यु के पश्चात उसकी स्मृति में लिखी गई है। इसमें कवि अपनी बेटी सरोज के विवाह के समय को स्मरण कर रहा है।

व्याख्या–कवि अपनी मृत पुत्री सरोज के विवाह को याद करते हुए कहते हैं कि हे पुत्री। तुम्हारा विवाह अन्य विवाहों से एकदम नया था क्यों कि माँ के अभाव में पिता ही तूझे स्नेह प्रदान कर रहा था। जब मंगल कलश के पवित्र जल से तेरा स्नान हो रहा था तब तुम उस समय मुझे देखती हुई मंद–मंद हँस रही थी। जब तुम कुछ कहना चाहती थी तब ऐसा लग रहा था जैसे तेरे होंठो पर बिजली का कंपन हो। तेरे हृदय में प्रियतम की सुंदर छवी झूल रही थी जिसे शब्दों से व्यक्त करना तेरे लिए संभव नहीं था। वह छवि तेरे शृंगार से ही मुखरित हो रही थी। तेरी दीर्घ साँसों ने तेरी आह को प्रकट किया और तेरे प्रत्येक अंग में दृढ विश्वास झलक रहा था। झुके हुए नेत्रों से तेरे सौंदर्य का प्रकाश उतरकर तेरे होठों पर काँपता हुआ सा प्रतीत हो रहा था। मैंने तेरी उस प्यास से भरी मूर्ति को देखा तो मुझे लगा जीवन के सुखद क्षणों का प्रथम गीत तो तू ही थी और तेरा विवाह ही मेरे जीवन का प्रथम वसंत था।

विशेष – (1) भाषा संस्कृतनिष्ठ होने पर भी सरल है।

(2) 'अंग–अंग' 'थर–थर–थर' में पुनकक्तिप्रकाश व 'नत–नयनों' में अनुप्रास अलंकार हैं।

(3) पुत्री की मृत्यु पर यह कविता 'शोक–गीत' है।

(4) मुक्त छन्द व विवाह से सम्बन्धित सुन्दर बिम्बों का प्रयोग हुआ है।

(xi) सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– निराला का जन्म 1898 ई में हुआ। वे आधुनिक छायावादी एवं स्वच्छंदतावादी कवि थे। छायावाद के चार आधार स्तम्भों में से एक निराला मुक्तछंद के प्रवर्तक कवि माने जाते हैं। इसके साथ–साथ वे प्रगतिवादी कवि भी है इसलिए उनके काव्य में शोषण और शोषकों के प्रति विरोध की अभिव्यक्ति हुई है। उन्होंने भारतीय प्रकृति और संस्कृति, भारतीय किसान और जीवन के यथार्थ के विभिन्न पक्षों का चित्रण किया है। निराला का जीवन संघर्षों से भरा हुआ है।

निराला की काव्य कृतियाँ निम्न है– परिमल, गीतिका अनामिका, बेला, भिक्षुक, तुलसीदास, कुकुरमुता, अणिमा, नए पते, अर्चना, आराधना, गीतगुंज आदि। बिल्लेसुर बकरिहा (उपन्यास)

उनका संपूर्ण साहित्य 'निराला रचनावली' के आठ खण्डों में प्रकाशित हो चुका है।

3. अज्ञेय–(यह दीप अकेला/मैंने देखा एक बूँद)

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न–</u>

(i) 'यह दीप अकेला स्नेह भरा' पंक्ति में 'दीप' शब्द किसका प्रतीक है–

(अ) समष्टि का (ब) व्यष्टि का (स) पंक्ति का (द) उपर्युक्त सभी का (ब)

शेखावाटी मिशन–100

(ii) 'इसको भी पंक्ति को दे दो' पंक्ति में 'पंक्ति' शब्द किसका प्रतीक है?

(अ) व्यक्ति का (ब) समाज का (स) दीप का (द) उपर्युक्त सभी का (ब)

(iii) 'पनडुब्बा' शब्द से तात्पर्य है–

(अ) पनडुब्बी (ब) गोताखोर (स) समुद्र (द) मछली (ब)

(iv) अकेले दीप के लिए क्या कामना की गई है।

(अ) दीप को प्रज्जवलित करने की (ब) दीप को अकेले रखने की

(स) दीप को पंक्तिबद्ध करने की (द) उपर्युक्त सभी (स)

(v) 'यह मधु है स्वयं काल की मौना का युग संचय' पंक्ति में 'मधु' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(अ) समाज (ब) समष्टि (स) शहद (द) व्यक्ति (द)

(vi) समुद्र से अलग हुई बूँद किसका प्रतीक है?

(अ) अमरता (ब) शाश्वतता (स) क्षणभंगुरता (द) विहलता (स)

(vii) 'यह दीप अकेला' कविता का मूल प्रतिपाद्य क्या है?

उत्तर – 'यह दीप अकेला' कविता में कवि अज्ञेय ने दीपक को मनुष्य के प्रतीक स्वरुप लिया है। जिस प्रकार एक अकेला दीपक समर्थ होते हुए भी अपना प्रकाश दूर–दूर तक नहीं फैला सकता, उसी प्रकार अकेला व्यक्ति शक्तिहीन होता है। वहीं दीपक अनेक दीपकों की कतारों में रख देने से अधिक जगमगाने लगता है तथा उसकी सौन्दर्यता बढ़ जाती है उसी प्रकार एक व्यक्ति समर्थ है, स्वतंत्र है, अपने आप में स्नेह एवं करुणा लिए हुए है। फिर भी उसकी सार्थकता समाज के साथ जुड़ने में है। अतः अज्ञेयजी कविता के माध्यम से व्यक्तिगत सता को सामाजिक सता से जोड़ने पर बल देते हैं।

(viii) 'क्षण के महत्व' को उजागर करते हुए 'मैंने देखा एक बूँद' कविता का मूल भाव लिखिए।

उत्तर – कवि ने अपने काव्य में क्षण को महत्व दिया है। जीवन में एक क्षण का बड़ा महत्व है। संध्याकाल में सागर की एक बूँद सागर के पानी से अलग होती है किन्तु क्षणभर में ही वह सागर में विलीन हो जाती है। उस एक क्षण की पृथकता का बड़ा महत्व है। बूँद स्वर्णिम किरणो से प्रकाशित होकर स्वर्णिम दीखने लगती है। इससे यह आत्मबोध होता है कि विराट् सता निराकार है किन्तु क्षणभर के लिए उसके जीवन में आकर अपने मधुर मिलन से उसके जीवन को प्रदीप्त कर देती है। इस प्रकार छोटी–सी कविता में एक क्षण के महत्व को प्रतिपादित किया है।

(ix) 'अज्ञेय' का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– अज्ञेय का मूल नाम 'सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन' है। उनका जन्म 1911 ई. में हुआ। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने कविता, कहानी, उपन्यास, यात्रावृत, निबन्ध, आलोचना आदि विद्याओं में लेखन कार्य किया। प्रकृति प्रेम और मानव मन के अन्तर्द्वन्द्व उनके प्रिय विषय हैं। उनकी कविता में व्यक्ति स्वातंत्र्य का आग्रह है। प्रयोगवाद के प्रवर्तक कवि अज्ञेय ने हिन्दी काव्य भाषा को नवीन स्वरूप प्रदान किया। उनकी भाषा तत्सम शब्दों से युक्त है तथा उसमें प्रचलित विदेशी और देशज शब्दों को भी स्थान प्राप्त है। उपन्यास तथा कहानियों की भाषा, विषय तथा पात्रानुकूल है। अज्ञेय ने अपने काव्य में मुक्त छन्द का प्रयोग किया है।

शंखनाद मिशन–100

महत्वपूर्ण कृतियांः–

उपन्यासः– – शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने–अपने अजनबी।

यातावृतः– अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली।

निबंधः– त्रिशंकु, आत्मनेपद।

कहानी संग्रह विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात, शरणार्थी, जयदोल, ये तेरे प्रतिरूप।

काव्य संग्रहः– भग्नदूत, चिन्ता, हरी घास पर क्षण भर, इन्द्रधनुष रौंदे हुए ये, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार आदि।

'आँगन के पार द्वार' घर साहित्य अकादमी व 'कितनी नावों में कितनी बार' पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार।

(x) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

मैंने देखा
एक बूँद सहसा
उछली सागर के झाग से,
रंग गई क्षण भर
ढलते सूरज की आग से।
मुझ को दीख गयाः
सूने विराट के सम्मुख
हर आलोक–धुआ अपनापन
है उन्मोचन
नश्वरता के दाग से।

प्रसंग – यह काव्यांश सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित 'मैंने देखा, एक बूँद' कविता से लिया गया है। इस कविता में कवि ने समुद्र से अलग हुई बूँद की क्षणभँगुरता का वर्णन किया है।

व्याख्याः–

कवि कहते हैं कि शाम के समय में मैंने देखा कि समुद्र के झागों से एक बूँद सहसा ऊपर उठी। वह बूँद अस्त होते हुए सूर्य की बाल किरणों के प्रकाश में रंगकर लाल रंग की हो गई। कवि उस बूँद के क्षण भर के अस्तित्व को ही उसके जीवन की चरम सार्थकता मानता हुआ कहता है कि अरुणाभ किरणों में अरुण हो उठने वाली उस बूँद को देखकर मेरे हृदय में भाव उठे कि मानव जीवन में आने वाले स्वर्णिम, विशेष क्षण ही हुआ करते हैं जो उन्हें विशेष तृप्ति प्रदान किया करते हैं। ऐसे क्षण मानव को नश्वरता के दाग (लाछंन या कलंक) से मुक्ति दिलाकर उसके अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध कर सकते हैं।

विशेष – (1) जीवन में क्षण के महत्व को प्रतिष्ठापित किया गया है।

(2) 'आग' 'दाग' जैसे शब्दों के प्रयोग से कवि की प्रयोगधर्मिता स्पष्ट दिखाई देती है।

रेखावाटी मिशन–100

(3) उस विराट सत्ता के सामने व्यक्ति एक केंद्र के समान होते हुए भी अपना एक अलग अस्तित्व रखता है।

(4) कविता की भाषा सरल, सहज एवं प्रसाद गुण से युक्त है।

4. केदार नाथ सिंह– (बनारस / दिशा)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) बनारस कविता में किस ऋतु का उल्लेख हुआ है?

(अ) शीत ऋतु (ब) वर्षा ऋतु (स) बसन्त ऋतु (द) हेमन्त ऋतु (स)

(ii) बनारस में सैकड़ों वर्षों से किसकी खड़ाऊ रखी है?

(अ) राम (ब) शिव (स) बनारस के लोगों की (द) तुलसीदास (द)

(iii) 'बनारस' कविता के अनुसार बनारस शहर को कौन दृढ़ता से एकता के सूत्र में बाँधे हुए है?

(अ) धीरे–धीरे होने की सामुहिक लय (ब) तुलसीदास

(स) कवि (द) मंदिर (अ)

(iv) 'पुराने शहर की जीभ किरकिराने' से तात्पर्य है–

(अ) मिट्टी उड़ने लगती है (ब) सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मचने लगती है

(स) अन्तर्मन में किरकिराहट (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

(v) 'लहरतारा' और 'मडुवाडीह्' क्या हैं?

(अ) एक गीत का नाम (ब) गंगा के घाट (स)

(स) बनारस के मोहल्ले (द) बनारस का प्राचीन नाम

(vi) 'दिशा' कविता किस भाव पर केन्द्रित है–

(अ) दर्शन मनोविज्ञान (ब) बालमनोविज्ञान (स) शिक्षा मनोविज्ञान (द) मस्तिष्क, मनोविज्ञान (ब)

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

(vii) 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से से क्या आशय है?

उत्तर– कवि का आशय यह है वसंत ऋतु में सर्दी कम हो जाती है और गंगा स्नान के लिए लोगों की भीड़ बढ़ जाती है। उनसे भिखारियों को खूब भीख मिलती है। उनके कटोरो में सिक्कों की खनक बढ़ जाती है। जिस प्रकार प्रकृति में वसंत ऋतु के आने पर मधुरता व खुशियाँ छा जाती हैं उसी प्रकार भिखारियों के चेहरों पर चमक भी बढ़ जाती है। कटोरों में पड़ते सिक्को की चमक में कवि को वसंत उतरता दिखाई देता है।

(viii) धीरे–धीरे होने की सामूहिक लय में क्या–क्या बँधा है?

उत्तर– धीरे–धीरे होने की सामूहिक लय में सारा बनारस शहर बँधा है। जो पहले जहाँ था वह सब वहीं स्थित है। सारा शहर एक सामूहिक लय में बँधा है। गंगा के घाटों पर नावें जहाँ बँधती थी वहीं बँधी हैं। सारी परम्पराएँ उसी रूप में विद्यमान है। तुलसीदास की खड़ाऊँ भी दीर्घकाल से वहीं रखी है। यहाँ के सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक वातावरण

शेखावाटी मिशन–100

में कोई परिवर्तन नहीं आया है। गंगा के प्रति लोगों की आस्था और मोक्ष की कामना अब भी यथावत है।

(ix) बनारस कविता में बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने कैसे सजीव किया है?

उत्तर – बसन्त के आगमन पर लोगों के मन में उल्लास भर जाता है जो उसकी पूर्णता का प्रतीक है। किसी न किसी पर्व पर दूर से आने वाले श्रध्दालु यहाँ एकातीत होते हैं। गंगा में स्नान करके पूजा–अर्चना करते हैं और विश्वनाथ के दर्शन करते हैं। इस प्रकार बनारस में पूर्णता व्याप्त रहती है। बनारस अपने अस्तित्व के साथ अपनी पूर्णता बनाए रखता है।

लोग शवों को अँधेरी गलियों से निकालकर गंगा–घाट की ओर ले जाते है और दाह संस्कार करते हैं। यह कार्य बनारस की रिक्तता को प्रकट करता है।

(x) 'सई साँझ' में घुसने पर बनारस की किन–किन विशेषताओं का पता चलता हैं?

उत्तर– संध्या के समय बनारस में प्रवेश करने पर गंगा जी की आरती के दर्शन होते हैं। मन्दिरों और घाटों पर दीप जलते दीखते हैं, उस समय बनारस की शोभा अद्‌भुत दिखाई देती है। गंगा के जल में गंगा के घाटों की, दीपों की और बनारस की छाया पड़ रही थी उसे देखकर ऐसा लगता था कि आधा शहर जल में है और आधा शहर जल के बाहर है। कहीं शव जलाए जा रहे हैं तो कहीं उनका जल प्रवाह किया जा रहा है। संध्या के समय बनारस में श्रध्दा आस्था विरक्ति, विश्वास और भक्ति के भाव देखने को मिलते हैं।

(xi) 'दिशा' कविता का मूल कथ्य क्या है?

उत्तर– यह कविता बाल मनोविज्ञान पर आधारित है। सबका यथार्थ अलग–अलग होता है। बच्चे अपने ढंग से यथार्थ को देखते हैं। बच्चे की पतंग जिस और उड़ रही है उसे हिमालय उधर ही दीखता है। कविता यह प्रेरणा देती है कि बच्चों से भी कुछ सीखा जा सकता है।

(xii) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

जो है वह सुगबुगाता है
जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचखियाँ
आदमी दशाश्वमेध पर जाता है
और पाता है घाट का आखिरी पत्थर
कुछ और मुलायम हो गया है
सीढियों पर बैठे बंदरों की आँखों में
एक अजीब सी नमी है
और एक अजीब सी चमक से भर उठा है
भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन।

प्रसंग–यह काव्यांश केदारनाथ सिंह द्वारा रचित 'बनारस' कविता से लिया गया है। बनारस शहर में वसंत के आगमन के साथ–साथ बनारस शहर की विशिष्टताओं का वर्णन किया गया है।

व्याख्या:–

शेखावाटी मिशन–100

कवि वर्णन करते हैं कि बनारस में वसंत के आगमन पर जो स्थापित कलाकार है वो अपनी कला तथा ज्ञान से शहर के लोगों को जागृत करने लगते है एवं जो स्थापित कलाकार नहीं हैं वे अपनी कला की शुरुआत का यही उचित समय समझते हैं। दशाश्वमेध घाट पर जाने वाले हर व्यक्ति को घाट का आखिरी पत्थर कुछ मुलायम प्रतीत होता है अर्थात् उस समय कठोर हृदय वाले व्यक्ति के आचरण में भी आस्था के कारण सहजता आ जाती है। कवि को घाट की सीढियों पर बैठे बन्दरों की आँखों में एक अजीब सी नमी दिखाई देती है। द्वार पर बैठे हुए भिखारियों के कटोरों में भी एक अजीब सी चमक आ जाती है। भाव यह है कि आस्थावान व दानदाताओं द्वारा भिखारियों को खूब भिक्षा मिलती है जिससे उनके चेहरे प्रसन्नता से चमक उठते हैं।

विशेष– (1) बनारस के लोगों की आस्था का अनूठे ढंग से वर्णन किया है।

(2) 'जो है वह सुगबुगाता है, जो नहीं है वह फेंकने लगता है पचाखियाँ पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार है।

(3) 'बैठे बंदरों' व 'अचानक आता' में अनुप्रास अलंकार है।

(4) कविता मुक्तछंद में है व लक्षणा शब्द शक्ति का प्रयोग किया गया है।

(5) भाषा सहज, सरल एवं आम बोलचाल के शब्दों से युक्त है।

(6) 'जीभ किरकिराना' मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

(xiii) केदारनाथ सिंह का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– केदारनाथ सिंह का जन्म सन् 1934 में बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ। वे मूलतः मानवीय संवेदनाओं के कवि हैं। अपनी कविताओं में उन्होंने बिम्ब–विधान पर अधिक बल दिया है। केदारनाथ सिंह की कविताओं में शोर–शराबा न होकर, विद्रोह का शांत और संयत स्वर सशक्त रूप में उभरता है। अब तक केदारनाथ सिंह के सात काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं– अभी बिल्कुल अभी जमीन पक रही है, यहाँ से देखो अकाल में सारस उत्तर कबीर तथा अन्य कविताएँ – बाघ, टालस्टाय और साइकिल।

कल्पना और छायावाद और आधुनिक हिंदी कविता में बिंब विधान का विकास (आलोचना), मेरे समय के शब्द तथा कब्रिस्तान में पंचायत (निबंध संग्रह), ताना–बाना (भारतीय भाषाओं का हिंदी में अनूदित काव्य संग्रह) 'अकाल में सारस' कविता संग्रह पर 1983 में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया।

5. रघुवीर सहाय – (वसंत आया/तोड़ो)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) 'वसन्त आया' कविता में मनुष्य की किस जीवन शैली पर व्यंग्य है–

(अ) आधुनिक जीवन शैली (ब) पुरानी जीवन शैली (स) दोनों (4) इनमें से कोई नहीं (अ)

(ii) "वे नन्दन वन होवेंगे यशस्वी" पंक्ति में नन्दन वन से तात्पर्य है–

(अ) नन्द बाबा का वन (ब) सुन्दरवन (स) आनन्ददायी वन (द) जंगल (स)

(iii) 'अमुक दिन, अमुक बार मदनमहीने की होवेगी पंचमी' पंक्ति में 'मदनमहीना' से तात्पर्य है–

(अ) श्रावण (ब) मार्गशीर्ष

शेखावाटी मिशन–100

(स) कामदेव का महीना (वसंत) (द) इन्द्रदेव का महीना (स)

(iv) मिट्टी में कौनसा रस विद्यमान होता है?

(अ) बंजरता (ब) उर्वरता (स) ऊसरता (द) बांझता (ब)

(v) 'तोड़ो' किस प्रकार की कविता है–

(अ) निराशाजनक (ब) विनोदपूर्ण (स) हास्ययुक्त (द) उद्‌बोधनपरक (द)

(vi) ऊसर बंजर, चरती परती को तोड़कर कवि ने क्या आह्‌वान किया है?

(अ) नवीन सृजन का (ब) किसान बनने का (स) उद्दण्ड बनने का (द) विनाश करने का (अ)

लघुत्तरात्मक प्रश्न व दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

(vii) 'वसन्त आया' कविता का मूल भाव लिखिए?

उत्तर– 'वसन्त आया' कविता में कवि की प्रमुख चिन्ता यह है कि आज के मनुष्य का प्रकृति से रिश्ता टूट गया है। वसन्त ऋतु का आना अब प्रकृति निरीक्षण से नहीं कैलेण्डर से जाना जाता है। पते झड़ते हैं, फूल खिलते हैं, आम के वृक्ष बौर से लद जाते हैं, कोयल की कूक सुनाई पड़ती है। पर हमें वसन्तागमन का बोध इनसे नहीं अपितु कैलेण्डर से और वसन्त–पंचमी की छुट्टी से होता है। कवि ने आधुनिक. मानव की जीवन शैली पर करारा व्यंग्य किया है। कविताएँ पढ़ने से हमें पता चलता है कि वसन्त में ढाक के जंगल लाल फूलों से भर जाते हैं और ऐसा लगता है कि जंगल में आग लग गई है। प्रकृति से दूर होते जाना मानव के लिए अच्छा नहीं है– कवि यही बात इस कविता के माध्यम से कहना चाहता है।

(viii) 'तोड़ो' कविता मूल प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'तोड़ो' एक उद्‌बोधनपरक कविता है। इस कविता का मूल प्रतिपाद्य यह है कि ऊसर–बंजर एवं ऊबड़–खाबड़ जमीन को उपजाऊ खेत में व्याप्त ऊब, खीज और बाधक तत्वों को तोड़कर उसे नवीन सृजन के योग्य बनाना जरूरी है। नव सृजन हेतु प्रकृति के साथ मन को भी सृजनशील बनाने का प्रयास करना चाहिए।

निबन्धात्मक, प्रश्नः–

(ix) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

जैसे बहन 'दा' कहती है
ऐसे किसी बंगले के किसी तरु (अशोक?) पर कोई चिड़िया कुऊकी
चलती सड़क के किनारे लाल बजरी पर चुरमुराए पाँव तले
ऊँचे तकवर से गिरे
बड़े–बड़े पियराए पत्ते
कोई छह बजे सुबह जैसे गरम पानी से नहाई हो–
खिली हुई हवा आई फिरकी–सी आई चली गई।
ऐसे, फुटपाथ पर चलते–चलते–चलते।

शैक्षवाटी मिशन–100

कल मैंने जाना कि वसंत आया।

संदर्भः– यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक अन्तरा भाग–2 में रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'बसन्त आया' कविता से लिया गया है।

प्रसंगः– इस कविता के माध्यम से कवि ने आज के मनुष्य की आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य किया है।

व्याख्याः–कवि कहते हैं कि जैसे बहन मुझे 'दा' (दादा) कहकर पुकारती है, ठीक इसी प्रकार किसी बंगले के पास अशोक वृक्ष पर कोई चिड़िया कुकने लगी। आवागमन के कारण चहल–पहल भरी सड़क के किनारे बिछी हुई लाल बजरी पर ऊँचे–ऊँचे पेड़ों से गिरे पीले पत्ते पैरों के नीचे आने से चरमराने लगे।

सूखे पत्तों की आवाज यह घोषित कर रही थी कि वसन्त आ गया है। प्रातःकाल छः बजे हवा ऐसे लगने लगी, जैसे वह गरम पानी से नहाकर आई हो। आनन्द से खिली हुई हवा हिलोर लेती हुई आयी और फिरकी के समान घूमकर चली गई। इस प्रकार के वातावरण में फूटपाथ पर चलते हुए मैंने जाना कि वसंत ऋतु आ गई है।

भाव यह प्रकृति है कि आधुनिक जीवन शैली के कारण में प्रकृति होने वाले परिवर्तनों को हम पहचान नहीं पाते हैं सिर्फ राह चलते या आते जाते उसका आगमन जान लेते हैं।

विशेषः–(1) भाषा सरल एवं देशज (आँचलिक) शब्दों से युक्त है।

(2) मुक्त छन्द एवं बिम्ब विधान आकर्षक है।

(3) 'हवा' का मानवीकरण किया गया है।

(4) 'जैसे बहन 'दा' कहती है।' 'फिरकी–सी' आदि में उपमा अलंकार है।

(5) आधुनिक जीवन शैली पर व्यंग्य है।

(x) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

तोड़ो तोड़ो तोड़ो
ये ऊसर बंजर तोड़ो
ये चरती परती तोड़ो
सब खेत बनाकर छोड़ो
मिट्टी में रस होगा ही जब वह पोसेगी बीज को
हम इसको क्या कर डालें इस अपने मन की खीज को?
गोड़ो गोड़ो गोड़ो

संदर्भ – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य–पुस्तक अन्तरा भाग–2 में रघुवीर सहाय द्वारा रचित 'तोड़ो' कविता से लिया गया है।

प्रसंग – कवि ने ऊसर भूमि को खेती के लिए तैयार करने का आह्वान किया है। उसने कहा है कि इसी प्रकार श्रेष्ठ काव्य रचना के लिए मन को ऊब और खीज से मुक्त करना भी आवश्यक है।

व्याख्या–कवि कहते हैं कि पृथ्वी और मानव मन दोनो के अनुपजाऊ रूप को समाप्त करके उसे उपजाऊ बनाने की आवश्यकता है। हमें चरागाहों व बंजर पड़ी भूमि को जोतकर या तोड़कर खेती योग्य बनाना होगा। जमीन में रस अर्थात नमी होती है जिससे वह बीज का पोषण करती है। कवि कहते हैं कि हम अपने मन की खीज या उदासीनता का क्या करें? क्योंकि

रेखावाटी मिशन–100

धरती को तो खोद कर उपजाऊ बनाया जा सकता है परन्तु मन की झुँझलाहट को दूर किए बिना सृजन नहीं कर सकते जिस प्रकार जमीन को जोतकर खेती योग्य बनाया जाता है उसी प्रकार मन की उदासीनता को समाप्त करके सृजन में लगाना है। तभी जाकर मन की उदासीनता समाप्त हो सकेगी तथा नवीन मनोभावों का विकास हो सकेगा।

विशेषः–

(1) भाषा, सरल भावानुकूल एवं प्रतीकात्मक है।

(2) कविता उद्‌बोधनपरक एवं प्रेरणादायी है।

(3) 'तोड़ो तोड़ो तोड़ो' व 'गोड़ो गोड़ो गोड़ो' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(4) काव्यांश में अनुप्रास व रूपक अलंकार का प्रयोग द्रष्टव्य है।

(5) निर्माण की बाधाओं को हटाकर नवीन सृजन का सन्देश दिया है।

6. तुलसीदास (भरत राम का प्रेम/पद)

वस्तुनिष्ट प्रश्न

(i) तुलसीदास द्वारा रचित 'भरत–राम का प्रेम' किस काव्य से लिया गया है?

(अ) रामचरितमानस के अयोध्या काण्ड से (ब) रामचरितमानस के बाल काण्ड से

(स) रामचरितमानस के अरण्य काण्ड से (द) रामचरितमानस के लंका काण्ड से (अ)

(ii) राम को वापस लाने के लिए भरत कहाँ गए थे–

(अ) लंका (ब) किष्किन्धा (स) चित्रकूट (द) जनकपुर (स)

(iii) 'कहब मोर मुनिनाथ निबाहा' पंक्ति में 'मुनिनाथ' शब्द प्रयुक्त हुआ है –

(अ) मुनि वशिष्ठ के लिए (ब) विश्वामित्र के लिए

(स) परशुराम के लिए (द) राम के लिए (अ)

(iv) 'मैं जानऊ निज नाथ सुभाऊ' पंक्ति में 'निज नाथ' शब्द प्रयुक्त हुआ है–

(अ) मुनि वशिष्ठ (ब) लक्ष्मण (स) राम (द)सीता (स)

(v) 'भरत–राम का प्रेम' काव्यांश में प्रयुक्त छन्द है–

(अ) गीतिका (ब) सवैया (स) कविता (द) दोहा–चौपाई (द)

(vi) 'भरत– राम का प्रेम' काव्यांश में किसकी मनोदशा का वर्णन किया गया है?

(अ) राम (ब) लक्ष्मण (स) वशिष्ठ (द) भरत (द)

(vii) 'पद' तुलसी की कौनसी रचना से लिए गए हैं–

(अ) कवितावली (ब) दोहावली (स) गीतावली (द) रामचरितमानस (स)

(viii) राम वियोग में माता कौशल्या किसे अपने हृदय से लगाती है–

(अ) धनुहियाँ (ब) पनहियाँ (स) बाजि (द) बाज (ब)

(ix) 'जननी निरखति बान धनुहियाँ' पंक्ति में 'जननी' शब्द प्रयुक्त हुआ है

रेज्ञावाटी मिशन–100

(अ) माता कौशल्या के लिए (ब) माता सुमित्रा के लिए

(स) माता केकैयी के लिए (द) उपर्युक्त तीनों के लिए (अ)

(x) कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना किससे की है?

(अ) भरत से (ब) राजा दशरथ से (स) वियोगी मोरनी से (द) पथिक से (स)

(xi) माता कौशल्या किसके बहाने राम को बुलाना चाह रही है?

(अ) भरत के बहाने (ब) दर्शन के बहाने (स) घोड़ों के बहाने (द) पथिक के बहाने (स)

(xii) 'ए बर बाजि बिलोकि आपने बहुरो बनहि सिधावौ' पंक्ति में 'बाजि' शब्द प्रयुक्त हुआ है–

(अ) रथ (ब) पथिक (स) कमल (द) घोड़े (द)

(xiii) 'रहि चकि चित्र लिखी–सी' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है–

(अ) रूपक (ब) उत्प्रेक्षा (स) अनुप्रास (द) उपमा (द)

लघुत्तरात्मक प दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

(xiv) 'भरत–राम का प्रेम' कविता में तुलसी ने राम की किन विशेषताओं की ओर संकेत किया है।

उत्तर– भरत कहने लगे कि मैं अपने प्रभु श्रीराम के स्वभाव के बारे में अच्छी तरह जानता हूँ। वे अपराधी पर भी क्रोध नहीं करते हैं, वे दयालु एवं सबसे स्नेह रखते हैं। मुझ पर उनकी विशेष कृपा है। खेल में भी वे कभी अप्रसन्न नहीं होते। उन्होने कभी बचपन में भी मेरा अहित नहीं किया। वे अपने परिवारजनों के प्रति अपार स्नेह रखते हैं

(xv) 'महीं सकल अनरथ कर मूला,' पंक्ति के आधार पर भरत की मनोदशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर – भरत समस्त अनर्थों की जड़ अपने को मानते हैं। वे कहते हैं कि पुत्र–मोह के कारण माता कैकेयी द्वारा राम को वनवास देना, राजा दशरथ का असामयिक निधन ये सब अनर्थ उनके कारण से ही हुए। आत्मग्लानि के साथ भरत कहते हैं कि श्रीराम तो अपराधियों पर भी क्रोध नहीं करते। अर्थात वे मुझे क्षमा कर देंगे और मेरा मन रखने के लिए वापस लौट आयेंगे।

(xvi) भरत का आत्म – परिताप उनके चरित्र के किस उज्ज्वल पक्ष की ओर संकेत करता है?

उत्तर– भरत का आत्म–परिताप इस बात का घोतक है कि वे साधु स्वभाव के हैं और राम के प्रति अगाध स्नेह रखते हैं। उनकी माता कैकेयी ने जो कुछ किया उसमें उनकी कोई सहभागिता नहीं है और राम को वनगमन में जो भी कष्ट उठाने पड़ रहे हैं उसके लिए वे स्वयं को दोषी मान रहे हैं।

(xvii) राम के वनगमन पश्चात माँ कौशल्या की मनःस्थिति का वर्णन तुलसी के पदों के आधार पर कीजिए।

उत्तर – राम के वनगमन के बाद माता कौशल्या उनके द्वारा प्रयुक्त धनुष–बाण, उनकी जूतियाँ देखकर वात्सल्य वियोग का अनुभव करती है और राम का स्मरण करती हुई उनकी यादों में खो जाती है। उनका वनगमन भूल जाती है और सुबह उनके कक्ष में जाकर उन्हे जगाती है। अचानक राम का वनगमन याद आता है तो वे जड़वत हो जाती है।

(xviii) गीतावली से संकलित पद 'राघौ एक बार फिरि आवौ' में निहित करुणा और संदेश को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'राधौ एक बार फिरि आवौ' पद से यह व्यक्त होता है कि माता कौशल्या राम के वियोग में अत्यन्त व्याकुल है। वह यह कहती है कि तुम्हारे प्रिय घोड़े तुम्हारे चले जाने से दुखी है, एक बार उन्हे अपने दर्शन दे दो, पर वास्तविकता यह है कि

शेखावाटी मिशन–100

घोडों के बहाने वह स्वयं राम को देखने के लिए व्याकुल है। इस पद में राम का पशु प्रेम, उनके हृदय की करुणा के साथ–साथ माता कौशल्या का वात्सल्य भाव भी व्यक्त हुआ है।

(xix) निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

भरत सौगुनी सार करत हैं अति प्रिय जानि तिहारे।

तदपि दिनहिं दिन होत झाँवरे मनहुँ कमल हिममारे।

उत्तर– (1) **<u>भावपक्ष–</u>**

माता कौशल्या पथिक के माध्यम से राम को वन में सन्देश भेजती हुई कहती हैं कि तुमने प्रेम से जिन घोड़ों को पाला–पोसा है वे तुम्हे देखने के लिए व्याकुल हैं। यद्यपि भरत उनकी पूरी देखभाल करते हैं परन्तु वे दिन–दिन उसी प्रकार दुर्बल होते जा रहे हैं जिस प्रकार पाला पड़ने से कमल मुरझाता जाता है।

(2) <u>कलापक्षः–</u>

ब्रजभाषा का सुन्दर प्रयोग हुआ है। तुकान्त छन्द के साथ–साथ इस पंक्ति में बिम्ब विधान की क्षमता भी है। 'सौगुनी सार' 'दिनहि दिन' में अनुप्रास व 'मनहुँ कमल हिममारे' में उत्प्रेक्षा अलंकार है।

(xx) तुलसीदास का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– तुलसीदास का जन्म सन् 1532 में हुआ। तुलसी लोकमंगल की साधना के कवि है। उन्हें समन्वय का कवि भी कहा जाता है। उनके काव्य में विश्व बोध और आत्मबोध का अद्वितीय समन्वय हुआ है। उनके साहित्य में मानव–प्रकृति और जीव–जगत सम्बंधी गहरी अन्तरदृष्टि और व्यापक जीवनानुभव परिलक्षित होता है। अवधी और ब्रजभाषा में उन्होने लेखन किया है। तुलसी की रचनाओं में भाव, विचार, काव्यरूप, छंद–विवेचन और भाषा की विविधता मिलती है। तुलसी सही अर्थों में लोककवि हैं।

<u>प्रमुख काव्य कृतियाँः–</u>

रामचरित मानस विनय पत्रिका, गीतावली, कवितावली, दोहावली, श्रीकृष्ण गीतावली, रामलला नहछू, बरवै रामायण, जानकी मंगल पार्वती मंगल, वैराग्य संदीपनी, रामाज्ञा प्रश्नावली।

7. मलिक मुहम्मद जायसी – (बारहमासा)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

(i) प्रेमाख्यान परंपरा का सर्वश्रेष्ठ काव्य है–

(अ) अखरावट (ब) पद्मावत (स) आखिरी कलाम (द) उपर्युक्त तीनों (ब)

(ii) जायसी भक्तिकाल की किस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं–

(अ) ज्ञानमार्गी शाखा (ब) प्रेममार्गी शाखा (स) कृष्ण मार्गी शाखा (द) राममार्गी शाखा (ब)

(iii) 'बारहमासा' काव्यांग की काव्यशैली हैः–

(अ) चित्रात्मक शैली (ब) बिम्बात्मक शैली (स) दौहा–चौपाई शैली (द) प्रतीकात्मक शैली (स)

शेखावाटी मिशन–100

(iv) जायसी ने 'बारहमासा' काव्यखण्ड में किस भाषा को अपनाया है?

(अ) ब्रजभाषा (ब) मैथिली भाषा (स) अवधी भाषा (4) भोजपुरी (स)

(v) 'अगहन देवस घटा निसि बाढी' पंक्ति में 'अगहन' से क्या तात्पर्य है?

(अ) कार्तिक मास (ब) पोष मास (स) फाल्गुन मास (द) मार्गशीर्ष मास (द)

(vi) 'जानहु सेज हिवंचल बूढी' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है–

(अ) अन्योक्ति (ब) विरोधाभास (स) उत्प्रेक्षा (द) उपमा (स)

(vii) 'केहिक सिंगार को, पहिर पटोरा' पंक्ति में 'पटोरा' का शाब्दिक अर्थ है–

(अ) रेशमी वस्त्र (ब) सूती वस्त्र (स) ऊनी वस्त्र (द) उपर्युक्त सभी (अ)

(viii) 'बारहमासा' काव्यखण्ड का प्रमुख रस है–

(अ) वीर रस (ब) संयोग श्रृंगार रस

(स) रोद्र रस (द) विप्रलम्भ श्रृंगार रस (द)

(ix) 'बारहमासा' काव्यांश में किसकी विरह–व्यथा का वर्णन है–

(अ) पद्मावती (ब) रत्नसेन (स) नागमती (द) कर्णवती (स)

(x) फागुन के महीने में जोड़ी बनाकर सखियाँ कौनसा खेल खेल रही थी?

(अ) घूमर (ब) चकरी (स) चरी (द) चाँचरि (द)

(xi) सिंहल देश की राजकुमारी पद्मावती और चितौड़ के राजा रत्नसेन की प्रेम कथा आधारित ग्रन्थ है–

(अ) अखरावट (ब) पद्मावत (स) आखिरी कलाम (स) इनमें से कोई नहीं (ब)

(xii) अगहन मास में विरहिणी नायिका की व्यथा–कथा का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– अगहन के महीने में ठण्ड बढ़ गई है, नागमती दुर्बल हो गई है और विरह वेदना रात की तरह बड़ी हो गई है। प्रिय के वियोग में राते कटती नहीं है। नागमती का रुप–सौंदर्य तो प्रिय अपने साथ ले गया । यदि वह अब भी लौट आवे तो उसका रूप रंग भी वापस आ जायेंगा। अपने प्रिय के पास सन्देश भिजवाती हुई वह कौए और भौंर से कहती है कि तुम जाकर उनसे कह देना कि तुम्हारी पत्नी तुम्हारे विरह की आग में जलकर मर गई और उसके शरीर से जो धुआँ निकला उसी से हम काले हो गए।

(xiii) माघ महीने में नायिका के विरह का चित्रण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– माघ महीने में पाला पड़ने लग गया है जिससे विरहिणी नायिका के लिए विरह का समय और कठिन हो गया है। जाड़े की ऋतु में जैसे वर्षा (मावट) होती है वैसे ही नायिका की आँखों से गिरने वाले आँसु उसके शरीर से लगते हैं तो उसे तीर की सी चुभन का अहसास होता है। प्रियतम पास नहीं है, तो वह न श्रृंगार करना चाहती और न ही रेशमी वस्त्र धारण करना चाहती। विरह के कारण से वह धागे की भाँति पतली हो गई है जिससे उसके गले में हार भी नहीं टिकता। नायिका कहती है कि हे प्रियतम यह विरह की पीड़ा उसे जलाकर मार डालना चाहती है।

शेखावाटी मिशन–100

(xiv) फाल्गुन मास में नागमती की हे विरह वेदना का वर्णन कीजिए।

उत्तर – फागुन के महीने में पवन झकोरों के साथ बहने लगा है जिससे सर्दी अत्यधिक बढ गई है। नायिका का शरीर पीले पत्तों की भाँति पीला पड़ गया है। समस्त वनस्पति प्रसन्न है पर नायिका प्रियतम के विरह में होली के समान जल रही है। सभी लोग फाग खेल रहे है पर नायिका को विरह के कारण कुछ भी अच्छा नहीं लगता । विरह की अधिकता इतनी है कि नायिका अपने शरीर की राख बन जाने के बाद भी प्रियतम का सानिध्य पाना चाहती है।

(xv) काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए।

पिय सौं कहेहु सँदेसड़ा, ऐ भँवरा ऐ काग।
सो धनि बिरहें जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।।

उत्तर– **(1) <u>भाव सौन्दर्य –</u>**

विरहिणी नायिका नागमती भौर और कौए के माध्यम से अपने प्रियतम को सन्देश देती है कि तुम्हारी पत्नी विरह की आग में जलकर मर गई है। उसके जलने के धुएँ से ही भौरे और कौए का शरीर काला हो गया है।

(2) <u>शिल्य सौंदर्य –</u>

दोहा छन्द, अतिशयोक्ति और अनुप्रास अलंकार है। भौरे द्वारा सन्देश भेजने की दूत–परम्परा विप्रलम्भ श्रृंगार रस और अवधी भाषा का सुन्दर प्रयोग किया गया है।

(xvi) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसँग व्याख्या कीजिए।

पूस जाड़ थरथर तन काँपा। सुरुज जड़ाई लंक दिसि तापा ।।
बिरह बाढि या दारुन सीऊ। कँपि कँपि मरौं लेहि हरि जीऊ।।।
कंत कहाँ हौं लागौं हियरे। पंथ अपार सूझ नहिं नियरे।।
सौर सुपेती आवै जूड़ी। जानहुँ सेज हिवंचल बूढी।।
चकई निसि बिछुड़े दिन मिला। हौं निसि बासर बिरह कोकिला।।
रैनि अकेलि साथ नहिं सखी। कैसें जिऔं बिछोही पँखी।।
बिरह सचान भँवै तन चाँड़ा। जीयत खाइ मुएँ नहिं छाँड़ा ।।

रकत ढरा माँसू गरा, हाड़ भए सब संख।
धनि सारस होई ररि मुई, आइ समेटहु पंख।।

उत्तर– **संदर्भ –** प्रस्तुत काव्यांग हमारी पाठ्यपुस्तक अन्तरा भाग –2 में मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' के 'बारहमासा' खण्ड से लिया गया है।

प्रसंग– जायसी ने इस पद्यांश में पोष महीने की बढ़ती हुई सर्दी से प्रभावित नागमती की विरह वेदना का वर्णन किया है।

व्याख्या– विरहिणी नागमति कहती है कि पूस के महीने में शीत की अधिकता के कारण शरीर थर–थर काँप रहा है। सर्दी की अधिकता से डरकर सूर्य भी लंका की दिशा में जाकर तपने लगा है। विरह की बाढ आ गई है और शीत अत्यधिक कठिन हो गया है। सर्दी से काँप–काँप कर मैं मरी जा रही हूँ। नागमती कहती है कि हे प्रियतम! तुम कहाँ

शैक्षवाणी मिशन–100

हो, आकर मेरे सीने से लग जाओं। प्रिय तक पहुंचने का रास्ता बहुत लंबा है और वे कहीं आस–पास दिखाई ही नहीं देते। रजाई ओढने पर भी जाड़ा लगता है और ऐसे लगता है जैसे सेज बर्फ से ढकी हुई हो। मेरी स्थिति तो उस चकई से भी बदतर हो गई है जो रात में अपने प्रियतम से बिछुड़ने के बाद दिन में मिल लेती है किन्तु मैं तो रात–दिन कोयल की भाँति विरह में पिय–पिय कूकती रहती हूँ। रात में भी सखियों के अभाव में अकेली रहती हुँ। विछुड़े हुए पंछी की भाँति मैं कैसे जीवित रह सकती हूँ। विरह तो बाज पक्षी, बना हुआ है जो जीते जी मुझे खाए जा रहा है और मरने के बाद भी नहीं छोड़ेगा।

अन्त में नागमती कहती है कि विरह के कारण मेरे शरीर का रक्त बह गया है, माँस गल गया है और हड्डियाँ सूखकर शंख के समान हो गई है। यह विरहिणी सारस की भाँति चीख पुकार करके मर गई है। अब तो प्रियतम आकर इसके पंखों अर्थात् अवशेषों को ही समेटेगा।

विशेष–

(1) भाषा अवधी, दौहा– चौपाई छन्द तथा विप्रलम्भ श्रृंगार रस का प्रयोग हुआ है।

(2) 'सर्दी से बचने के लिए सूर्य दक्षिण दिशा में चला गया' कहकर सर्दी की अधिकता बताई है।

(3) नागमति के विरह का मार्मिक चिन्त्रण है।

(4) 'विरह सचान', 'विरह कोकिला' में रूपक अलंकार और 'धनि सारस होई ररि मुई' में उपमा अलंकार है।

(5) 'सुरुज जड़ाई लंक दिसि तापा' में उत्प्रेक्षा, अन्तिम पंक्तियों में अतिशयोक्ति व अनेक जगह अनुप्रास अलंकार द्रष्टव्य है।

(xvii) मलिक मुहम्मद जायसी का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– जायसी का जन्म सन् 1492 में अमेठी (उ.प्र.) के निकट जायस नामक जगह पर हुआ। जायसी सूफी प्रेगमार्गी शाखा के सर्वश्रेठ कवि माने जाते हैं और उनका 'पद्मावत' प्रेमाख्यान परम्परा का सर्वश्रेष्ठ प्रबंधकाव्य है। फारसी की मसनवी शैली में रचित इस काव्य रचना के लिए दोहा–चौपाई शैली अपनाई है। भाषा उनकी ठेठ अवधी और काव्य–शैली अत्यंत प्रौढ और गंभीर है। 'पद्मावत' ही जायसी की ख्याति का प्रमुख आधार है उनके अन्य ग्रन्थ है– अखरावट और आखिरी कलाम।

8. विद्यापति – (पद)

वस्तुनिष्ठ प्रश्नः–

(i) विद्यापति के पद किस भाषा में रचित है–

(अ) ब्रज (ब) मैथिली (स) अवधी (द) खड़ी बोली (ब)

(ii) 'गोकुल तजि मधुपुर बस रे' पंक्ति में श्रीकृष्ण गोकुल छोड़कर कहाँ बस गये है?

(अ) मथुरा (ब) आगरा (स) द्वारका (द) वृदावन (अ)

(iii) कवि ने नायिका के प्रियतम की किस महीने में आने की संभावना व्यक्त की है?

(अ) मार्गशीर्ष (ब) सावन (स) भाद्रपद (द) कार्तिक (द)

(iv) "कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि मुदि रहए दु नयान" पंक्ति के आधार पर नायिका अपने नेत्र बन्द कर लेती है–

शैक्षवाटी मिशन–100

(अ) नायक को देखकर (ब) भौरो को देखकर (स)

(स) वन प्रदेश के फूलों को देखकर (द) कोयल को देखकर

(v) कोयल और भौरों की आवाज सुनकर नायिका की प्रतिक्रिया हुई–

(अ) हाथों से कान बन्द कर लिये (ब) आँखे बन्द कर ली

(स) प्रियतम से मिलने चली गई (द) वह अत्यन्त दुःखी हुई (अ)

(vi) विरह में राधा का शरीर किसके समान क्षीण होता जा रहा है?

(अ) द्वादशी के चन्द्रमा के समान (ब) त्रयोदशी के चन्द्रमा के समान

(स) चतुर्दशी के चन्द्रमा के सम्मान (द) इनमें से कोई नहीं (स)

(vii) रानी लाखिमा देवी पर मुग्ध होकर रमण कर रहें हैं–

(अ) राजा रत्नसिंह (ब) राजा मानसिंह (स) राजा जयसिंह (द) राजा शिवसिंह (द)

(viii) विद्यापति किस राजा के अभिन्न मित्र, राजकवि और सलाहकार थे?

(अ) मिथिला नरेश राजा जनक (ब) मिथिला नरेशराजा शिवसिंह

(स) बूँदी नरेश छत्रसाल (द) बूँदी नरेश बुधसिंह (ब)

(ix) "धरनी धरि धनि कत बेरी बइसइ, पुनि तहि उठइ न पारा" पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है–

(अ) अनुप्रास (ब) अतिश्योक्ति (स) उपर्युक्त दोनों (द) इनमें से कोई नहीं (स)

(x) "तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन–चौदसि–चाँद समान उपर्युक्त पंक्ति में अलंकार है–

(अ) पुनरूक्तिप्रकाश (ब) उपमा (स) अनुप्रास (द) उपर्युक्त सभी (द)

(xi) आदिकाल और भक्तिकाल के संधिकवि माने जाते है–

(अ) तुलसीदास (ब) विद्यापति (स) जायसी (द) धनानन्द (ब)

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

(xii) प्रियतमा के दुःख के क्या कारण है?

उत्तर – प्रियतमा इसलिए दुखी है क्योंकि उसके प्रियतम पास नहीं है। सावन के महीने को नायक के बिना काट पाना उसके लिए कठिन हो रहा है। प्रियतम के बिना एकाकी भवन उसे काटने को दौड़ता है। नायक विरहिणी नायिका का मन अपने साथ हरण करके ले गए। वह सखी से कहती है कि मेरे दुख की मेरी पीड़ा को भला दूसरा कैसे जान सकता, इसे तो वही जान सकता है जिसने विरह का दुःख झेला हो। इस प्रकार प्रियतमा के दुःख का मूल कारण है प्रियतम का परदेश गमन जिससे उसे विरह का दुःख झेलना पड़ा।

(xiii) 'जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल' उक्त पंक्ति के आधार पर विद्यापति की नायिका की मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर– नायक को सदैव देखते रहने के बाद भी विरहिणी नायिका के नेत्र तृप्त नहीं होते। वह हमेशा उसे ही देखते रहना चाहती है। सखी ने जब नायिका से प्रेम के अनुभव के बारे में पूछा तो नायिका ने कहा कि प्रेम में सदा अतृप्ति रहती है। यह

शेखावटी मिशन–100

अतृप्ति ही प्रेम की पहचान है। नायिका के मन में नायक के रूप दर्शन की लालसा है। कवि इस पंक्ति के माध्यम से यही व्यक्त करना चाहता है।

(xiv) 'सेह पिरिति अनुराग बखानिअ तिल तिल नूतन होए।' पंक्ति से लेखक का क्या आशय है?

उत्तर– नायिका अपने प्रियतम के प्रेम का जब–जब वर्णन करती है तब–तब उसमें नवीनता और ताजगी दिखाई देती है। कवि के अनुसार वही प्रेम और अनुराग वर्णन करने योग्य है जिसमें क्षण–क्षण नवीनता का अनुभव हो। प्रेम की एक विशेषता है, नित नवीनता। इसी प्रकार जिस प्रीति में कभी पुरानापन न आये, जो सदैव नयी–नयी सी लगे, वही प्रीति बखानने योग्य है।

निबन्धात्मक प्रश्नः–

(xv) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि,
मूदि रहए दु नयान।
कोकिल–कलरव, मधुकर–धुनि सुनि,
कर देई झाँपइ कान।।
माधव, सुन–सुन बचन हमारा।
तुअ गुन सुंदरि अति भेल दूबरि–
गुनि–गुनि प्रेम तोहारा।।
धरनी धरि धनि कत बेरि बइसइ,
पुनि तहि उठइ न पारा।
कातर दिठि करि, चौदिस हेरि–हरि
नयन गरए जल–धारा ।।
तोहर बिरह दिन छन–छन तनु छिन–
चौदसि – चाँद समान।
भनई विद्यापति सिबसिंह नर–पति
लाखिमादेइ–रमान।।

उत्तर– **संदर्भ–** प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठयपुस्तक अन्तरा भाग–2 में विद्यापति द्वारा रचित 'पद' से लिया गया है।

प्रसंग– विरहिणी नायिका की विरह दशा के बारे में बताती हुई कोई सखी श्रीकृष्ण से कहती है कि वह अत्यन्त दुर्बल हो गई है और धरती पर बैठ जाये तो पुनः उठ भी नहीं पाती है।

व्याख्या– दूती ने जाकर श्रीकृष्ण से कहा – हे कृष्ण ! तुम्हारे विरह में राधा अत्यन्त व्याकुल हो रही है। वह कमल मुखी जब वन प्रदेश के फूलों को देखती है तो दोनो नेत्र बन्द कर लेती है और जब कोयल की मधुर कूक और भौरों का गुंजार सुनती है तो दोनों हाथों से अपने कान बन्द कर लेती है। तुम्हारे गुणों और प्रेम के बारे में सोच–सोचकर वह

शेखावाटी

सुन्दरी अत्यन्त दुर्बल हो गई है। वह नायिका धरती को पकड़–पकड़कर कितनी ही बार बैठ जाती है और पुनः उठ भी नहीं पाती। वह कातर दृष्टि से चारों दिशाओं में देखती रहती है और आँखों से आँसुओं की धारा बहती रहती है। तुम्हारे विरह में उसका शरीर उसी प्रकार क्षीण होता जा रहा है जिस प्रकार चतुर्दशी का चाँद क्षीण होता है। कवि विद्यापति कहते हैं कि राजा शिवसिंह अपनी पत्नी लखिमादेवी के साथ रमण करते हैं।

विशेष – (1) इस पद में कोमलकान्त पदावली युक्त मैथिली भाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) विरह की तीव्रता का मार्मिक वर्णन है।

(3) 'कमलमुखि, चौदसि चाँद समान' में उपमा अलंकार, 'धरनी धरि ..... उठइ न पारा' में अतिशयोक्ति अलंकार है।

(4) अनेक जगह पुनरुक्ति प्रकाश व अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग दृष्टव्य है।

(5) गेय छन्द, वियोग श्रृंगार रस व माधुर्य गुण का प्रयोग हुआ है।

(xvi) विद्यापति का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर– विद्यापति का जन्म सन् 1380 ई. में हुआ। वे भक्ति और श्रृंगार के कवि हैं। उनके काव्य में प्रेम और सौंदर्य की जैसी अनुभूति हुई है वैसी अन्यन्त दुर्लभ है। विद्यापति का संस्कृत, अवहट्ट (अपभ्रंश) तथा मैथिली पर पूरा अधिकार था। उन्हें मैथिल कोकिल और अभिनय जयदेव कहा जाता है। लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण स्तुति–पदों में विभिन्न देवी देवताओं का चित्रण, प्रकृति की मनोहर छवि, और नख–शिख वर्णन उनके काव्य के मुख्य विषय है। मिथिला क्षेत्र के लोक व्यवहार में उनके पद इतने रच–बस गये हैं कि पदों की पंक्तियाँ बन गई है। वे आदिकाल और भक्तिकाल के संधि कवि कहे जाते हैं।

उनकी मुख्य काव्य कृतियाँ हैं– कीर्तिलता, कीर्तिपताका (अवहट्ट में रचित), पदावली (मैथिली में रचित), पुरुष परीक्षा, परिक्रमा, लिखनावली।

9. घनानन्द (कवित)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(i) रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं–

(अ) घनानन्द (ब) विद्यापति (स) तुलसीदास (द) जायसी (अ)

(ii) घनानन्द दिल्ली के किस बादशाह के मीर मुंशी थे ?

(अ) औरंगजेब (ब) जहाँगीर (स) मुहम्मद शाह (द) शाहजहाँ (स)

(iii) घनानन्द की प्रेमिका थी –

(अ) मरवण (ब) मृगावती (स) सुजान (द) मधुमालती (स)

(iv) वृंदावन जाने के बाद घनानन्द किस सम्प्रदाय में दीक्षित हुए–

(अ) श्री सम्प्रदाय (ब) वल्लभ सम्प्रदाय (स) ब्रह्म सम्प्रदाय (द) निंबार्क सम्प्रदाय (द)

(v) कवि घनानन्द के प्राण किसमें अटके हुए हैं?

(अ) बादशाह के दर्शन के लिए (ब) सुजान के दर्शन के लिए

(स) ईश्वर के दर्शन के लिए (द) इनमें से कोई नहीं (ब)

शेखावाटी मिशन–100

(vi) "अब ना घिरत घन आनन्द निदान को" रेखांकित पद में अलंकार है–

(अ) यमक (ब) श्लेष (स) अन्योक्ति (द) सन्देह (ब)

(vii) 'आनाकानी आरसी निहारिबो करौगे कौलौं।' रेखांकित पद का प्रतीकार्थ है–

(अ) सीसा (ब) दर्पण

(स) आलसी (द) अंगूठे में पहना जाने वाला शीशा जड़ा आभूषण (द)

(viii) "कुकभरी मूकता बुलाय आप बोलिहै।" पंक्ति में अलंकार है–

(अ) मानवीकरण (ब) सन्देह (स) विरोधाभास (द) भ्रांतिमान (स)

(ix) 'प्रेम की पीर' के कवि माने जाते हैं–

(अ) घनानन्द (ब) जायसी (स) विद्यापति (द) निराला (अ)

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रशन

(x) कवि मौन होकर प्रेमिका के कौनसे प्रण पालन को देखना चाहते हैं?

उत्तर– कवि मौन होकर प्रेमिका के उपेक्षा के प्रण को देखना चाहते हैं। प्रेमिका शीशा या अँगूठी के नगीने को देखकर प्रियतम की तरफ देखना ही नहीं चाहती। वह कानों में रूई डालकर नायक की उपेक्षा कर रही है। कवि यह देखना चाहते हैं कि इस तरह का बहाना बनाकर कब तक उसकी उपेक्षा करती है।

(xi) 'घनानन्द वियोग के कवि हैं।' पठित पदों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– कवि घनानन्द सूजान से प्रेम करते थे परन्तु सुजान ने उनसे बेवफाई की जिस कारण से उनका हृदय वियोग वेदना से ओत–प्रोत हो गया। इसलिए उसकी यादों में सुजान चरित काव्य की रचना की इनकी रचनाओं का आधार सुजान है। अतः उन्हे वियोग वेदना का कवि माना जाता है। इनकी कविता में प्रिय की निष्ठुरता का, अपनी व्याकुलता का, प्रिय के दर्शन की लालसा का व प्रिय के सौन्दर्य का मार्मिक चित्रण किया गया है।

निबन्धात्मक प्रश्न

(xii) निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

बहुत दिनान को अवधि आसपास परे,
खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को।
कहि कहि आवन छबीले मनभावन को
गहि गहि राखति ही दै दै सनमान को।
झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास ह्वै कै,
अब ना घिरत घन आनंद निदान को।
अधर लगे हैं आनि करि के पयान प्रान,
चाहत चलन ये सँदेसो लै सुजान को।।

उत्तर –**संदर्भ** – यह पद्यांश हमारी पाठय पुस्तक अन्तरा भाग–2 में घनानंद द्वारा रचित 'कवित' शीर्षक से लिया गया है।

प्रसंग – इसमें कवि ने अपनी प्रेमिका सुजान के दर्शन की लालसा प्रकट करते हुए कहा है कि सुजान के दर्शन के

शेखावाटी मिशन–100

लिए ही ये प्राण अब तक अटके हुए है।

व्याख्या– कवि घनानन्द सुजान को लक्ष्य कर कहते हैं कि अब तो बहुत दिन हो गए हैं मेरे प्राण आपके दर्शन की लालसा में ही अटके हुए हैं। अन्यथा कब के शरीर छोड़कर निकल गये होते। आपके आने की अवधि बीत गई पर ये निरन्तर आपका इन्तजार करते रहते हैं। जैसे ही आपके आने की अवधि पास आती है मेरे ये प्राण आपके दर्शन की लालसा से छटपटाने लगते हैं और इनकी व्याकुलता बढ़ जाती है। छैल छबीली प्रिया सुजान से कई बार आने को कहा पर वह नहीं आयी। कवि कहते हैं कि हे मनभावन सुजान अब आकर तो मेरे सम्मान को बचा लो। मैं तुम्हारी झूठी और विश्वास न करने योग्य बातों पर विश्वास करके उदास हूँ। अब तो घना आनन्द देने वाले बादल भी नहीं घिरते जिससे मुझे तृप्ति मिल सके। अब स्थिति यह हो गई है कि मेरे प्राण प्रयाण करने के लिए अधरों तक आने लगे हैं। मेरे प्राण सुजान का सन्देश लेकर जाना चाहते है, इसी आशा में से अटके हुए हैं नहीं तो कभी के निकल गए होते ।

विशेषः–(1) सरस और भावपूर्ण ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ है।

(2) प्रियतम के दर्शन की लालसा व निश्छल प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है।

(3) 'घन आनंद' में श्लेष अलंकार, 'कहि कहि', 'गहि गहि', 'दै दै' आदि में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(4) 'अवधि आसपास', 'पयान प्रान' 'चाहत चलन' आदि में अनुप्रास अलंकार द्रष्टव्य है।

(5) कवित छन्द, वियोग श्रृंगार रस है।

(xiii) कवि घनानन्द का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर– घनानंद का जन्म 1673 ई. में हुआ। वे रीतिकाल की रीतिमुक्त काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि थे। घनानंद मूलतः प्रेम की पीड़ा के कवि हैं। वियोग वर्णन में उनका मन आधिक रमा है। उनकी रचनाओं में प्रेम का अत्यन्त गंभीर, निर्मल, आवेगमय, और व्याकुल कर देने वाला उदात्त रूप व्यक्त हुआ है इसलिए उन्हें साक्षात रसमूर्ति कहा गया है। उनकी कविता में लाक्षणिकता, वक्रोक्ति, वागविद्ग्धता के साथ अलंकारों का कुशल प्रयोग मिलता है। घनानन्द की भाषा परिष्कृत और साहित्यिक ब्रजभाषा है। वस्तुतः वे ब्रजभाषा प्रवीण ही नहीं सर्जनात्मक काव्यभाषा के प्रणेता भी थे

प्रमुख काव्य रचनाएँ– सुजान सागर, विरह लीला, कृपाकंड निबंध, रसकेलि वल्ली आदि प्रमुख हैं।

अन्तरा भाग–2 (गद्य खण्ड)

रामचंद्र शुक्ल (प्रेमधन की छाया स्मृति)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

प्रः1 प्रेमधन का पूरा नाम क्या है? (अ)

(अ) बदरी नारायण चौधरी (ब) वैद्यनाथ मिश्र

(स) भारतेंदु हरिश्चंद्र (क) इलाचन्द्र जोशी

प्रः2 "खम्भा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की" यह पंक्ति किसने किसके बारे में लिखी? (ब)

(अ) शुक्ल जी में चौधरी साहब के बारे में (ब) वामनाचार्य गिरि ने चौधरी साहब के बारे में

शेखावाटी मिशन–100

(स) चौधरी साहब ने शुक्ल के बारे में (द) शुक्ल जी ने भारतेंदु जी के बारे में

प्र:3 रामचंद्र शुक्ल के पिताजी किस प्रेस की किताबें लेखक से छिपा कर रखते थे?

(अ) गीता प्रेस (ब) अशोक प्रकाशन (स) ज्ञान भारती प्रेस (द) भारत जीवन प्रेस (द)

प्र:4 'प्रेमघन की स्मृति छाया' पाठ में 'मिर्जापुर' शब्द का क्या अर्थ लिया गया है?

(अ) सरस्वती नगर (ब) यमुनानगर (स) लक्ष्मीपुर (द) अलीपुर (स)

प्र:5 समवयस्क हिन्दी प्रेमियों में कौनसे लेखक सम्मिलित नहीं थे

(अ) पं. लक्ष्मीनारायण चौबे (ब) बद्रीनाथ गौड़

(स) बद्रीनारायण चौधरी (द) पं. उमाशंकर द्विवेदी **(स)**

प्र:6 बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' के व्यक्तित्व की विशेषता नहीं है–

(अ) वे खानदानी रईस थे (ब) वे अपने सम्पूर्ण कार्य स्वयं करते थे

(स) वे कवि हृदय के साथ बोलने में वक्र थे (द) वे नागरी भाषा के कटर समर्थक थे **(ब)**

प्र:7 'अरे! ! जब फूट जाई तबै चलत आवह' कथन से चौधरी साहब की किस मनोवृति का आभास होता है।

(अ) वे आलसी थे (ब) वे स्वावलम्बी थे

(स) वे रईसी प्रकृति के थे (द) वे नौकरों पर आश्रित नहीं थे **(स)**

प्र:8 मिर्जापुर में भारतेन्दु हरिशचन्द्र के परम मित्र कौन रहते थे?

(अ) बदरीनारायण चौधरी (ब) उमाशंकर द्विवेदी

(स) लक्ष्मी नारायण चौबे (द) बद्रीनाथ गौड़ **(अ)**

लघुतरात्मक प्रश्न–(40 शब्द)

प्र:1 'निस्संदेह' शब्द को लेकर लेखक ने किस प्रसंग का जिक्र किया है?

उत्तर– लेखक अपनी समवयस्क मित्र–मंडली में हिन्दी के नए–पुराने लेखकों की चर्चा किया करता था। इस चर्चा में 'निस्संदेह' इत्यादि शब्द आया करते थे, जबकि जिस स्थान पर लेखक रहता था, वहाँ अधिकतर वकील, मुख्तार तथा कचहरी में काम करने वाले अफसर और अमले रहते थे। ये लोग उर्दू को तरहीज देते थे अतः उनके कानों को हम लोगों की हिन्दी कुछ अटपटी और अनोखी लगती थी। इसलिए उन्होंने लेखक की मित्र मंडली का नाम 'निस्संदेह लोग' रख लिया था।

प्र:2 रामचन्द्र शुक्ल के निबंध के आधार पर चौधरी प्रेमधन के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए?

उत्तर– (i) चौधरी साहब का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उनके काले लंबे बाल कंधे तक लटकते रहते थे। वे गंभीर मुद्रा में टहलते रहते थे। जब वो टहला करते थे, तो एक लड़का पान की तश्तरी लेकर उनके पीछे–पीछे चलता रहता था।

(ii) उनके घर में हमेशा साहित्यकारों की भीड़ रहती थी।

(iii) वे रईसों का जीवन जीते थे। उनके यहाँ उत्सवों और त्योहारों के मौसम में खूब नाचगान हुआ करता था।

(iv) उनका बात करने का ढंग निराला था, उनमें विलक्षण वक्रता रहती थी।

(v) लोगों का मजाक बनाना तथा उन पर व्यंग्य करना उनका शौक था।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:3 लेखक ने अपने पिताजी की किन–विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर–लेखक राम चन्द्र शुक्ल ने अपने पिताजी की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया –

1) वे फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिन्दी कविता के प्रेमी थे

2) भारतेन्दु जी के नाटक उन्हें बहुत प्रिय थे। इन नाटको को कभी– कभी सुनाया करते थे।

3) वे रात को घर के सब लोगों को इकट्ठा कर उन्हें राम चरित मानस और रामचन्द्रिका बड़े चिताकर्षक ढंक से पढ़कर सुनाया करते थे।

प्र:4 बचपन में लेखक के मन में भारतेंदुजी के सम्बन्ध में कैसी भावना जगी रहती थी?

उत्तर–बचपन में लेखक रामचन्द्र शुक्ल के मन में भारतेंदु जी के संबन्ध में एक अपूर्व मधुर भावना जगी रहती थी। उनकी बाल–बुद्धि भारतेंदु हरिश्चन्द्र और सत्यवादी हरिशचंद्र नाटक के नायक राजा हरिश्चन्द्र में कोई भेद नहीं कर पाती थी।

प्र:5 लेखक का हिन्दी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया–

उत्तर–ज्यों–ज्यों लेखक सयाना होता गया हिन्दी साहित्य की ओर उसका झुकाव बढ़ता गया। उसके पिताजी साहित्य के प्रेमी थे। भारत जीवन प्रेस की किताबें उनके यहाँ आया करती थी साथ ही मिर्जापुर में केदारनाथ पाठक ने एक पुस्तकालय खोला था जहाँ से किताबें लाकर रामचन्द्र शुक्ल पढ़ा करते थे। अपने समवयस्क मित्रों– काशीप्रसाद, जायसवाल, भगवानदासजी हालना, पं. बदरीनाथ गौड़, और पं. उमाशंकर द्विवेदी के साथ वे हिन्दी के नये–पुराने लेखकों की चर्चा करते रहते थे। परिणामतः हिन्दी साहित्य की ओर उनका झुकाव बढ़ता गया।

प्र:1 सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

वे लोगो को प्राय बनाया करते थे, इससे उनसे मिलने वाले लोग भी उन्हें बनाने की फिक्र में रहा करते थे। मिर्जापुर में पुरानी परिपाटी के एक बहुत ही प्रतिभाशाली कवि रहते थे, जिनका नाम था वामनाचार्यगिरि। एक दिन वे सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कविता जोड़ते चले जा रहे थे। अंतिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों पर बाल छिटकाए खंभे के सहारे खड़े दिखाई पड़े। चट कवित्त पूरा हो गया और वामनजी ने नीचे से वह कवित्त ललकारा, जिसका अंतिम अंश था– "खंभा टेकि खड़ी जैसे नारि मुगलाने की।"

उत्तर– **संदर्भ –** प्रस्तुत गंधारा पाठ्यपुस्तक 'अंतरा' (भाग–2) में संकलित 'प्रेमधन की छाया–स्मृति' पाठ जो रामचन्द्र शुक्ल द्वारा रचित संस्मरणात्मक निबंध से उदृधत है।

प्रसंग – इस गंधाश में लेखक ने प्रेमधन जी के व्यक्तित्व के विषय में बताया है।

व्याख्या – लेखक ने प्रेमधन जी के विषय में बताया है कि वे लोगों से हास–परिहास किया करते थे, अकसर लोग उनसे मिलने वाले भी उनका मजाक बनाने की इसलिए ताक में रहते थे। मिर्जापुर में एक पुरानी परिपाटी के प्रतिभाशाली कवि रहते थे। एक दिन वे प्रेमघन के ऊपर कविता बनाते हुए चले जा रहे थे। कविता का आखिरी चरण बनना रह गया था। तभी उन्हें बरामदे में चौधरी साहब खडे, दिखाई दिए, जिनके कंधों पर बाल फैले हुए थे लिए हुए खड़े थे और वह एक हाथ से खंभे का सहारा जैसे कोई मुगल स्त्री खड़ी हो। इस तरह उन्होंने प्रेमघन पर व्यंग्यपूर्ण कविता रच कर

शेखावाटी मिशन–100

उनका मजाक बनाया।

विशेष –(i) भाषा प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिन्दी है।

(ii) शैली वर्णनात्मक है।

(iii) तत्सम शब्दों का चयन किया है।

प्र:2 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल उच्चकोटि के आलोचक,निबंधकार, साहित्य चिंतक एवं इतिहास लेखक के रूप में जाने जाते है। उन्होंने अपने मौलिक लेखन, संपादन व अनुवादों से हिन्दी साहित्य में पर्याप्त वृद्धि की।

भाषा – आचार्य शुक्ल ने संस्कृत तत्सम शब्दावली युक्त तथा मुहावरेदार परिष्कृत खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग किया है। आवश्यकतानुसार वे अपनी भाषा में अंग्रेजी और हिन्दी फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी करते है। शैली – शुक्लजी की गद्य शैली विवेचनात्मक है जिसमें विचार प्रधानता, सूक्ष्म तर्क योजना, सदृश्यता, व्यंग्य–विनोद का भी योगदान है। विषय के अनुसार वे कभी व्याख्यात्मक शैली का, कभी आलोचनात्मक शैली का तो कभी हास्य–व्यंग्य प्रधान शैली का प्रयोग करते हैं।

प्रमुख रचनाएँ – चिन्तामणी, रस–मीमांसा (निबन्ध) हिन्दी साहित्य का इतिहास, तुलसीदास सूरदास त्रिवेणी (समालोचना), जायसी ग्रन्थावली, भ्रमरगीतसार, हिन्दी शब्द सागर, काशीनागरी प्रचारिणी पत्रिका, आनन्द एवं कादम्बिनी पत्रिका (सम्पादन) ग्यारह वर्ष का समय (कहानी), अभिमन्यु वध, (बुद्धचरित काव्य ग्रन्थ।)

पाठ–2

पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (सुमिरिनी के मनके)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

प्र:1 'बालक बच गया' निबंध में प्रधानाध्यापक के बच्चे की उम्र कितनी थी?

(अ) सात वर्ष (ब) आठ वर्ष (स) नौ वर्ष (द) पाँच वर्ष (ब)

प्र:2 'बालक बच गया' निबंध में बच्चे को सबके सामने किस तरह से दिखाया जा रहा था?

(अ) एक हीरो की तरह (ब) एक नेता की तरह

(स) एक अध्यापक की तरह (द) मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह (द)

प्र:3 'बालक बच गया' घड़ी के पुर्जे, ढेले चुन लो शीर्षक रचनाएं साहित्य की किस विधा के अन्तर्गत आती है?

(अ) लघु कथा (ख) लघुनिबंध (स) लघु नाटक (द) लघु कहानी (ब)

प्र:4 किस लेखक को 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित किया गया है?

(अ) रामचंद्र शुक्ल (ब) हजारी प्रसाद द्विवेदी (स) चौधरी प्रेमधन (द) चन्द्रधर शर्मा गुलेरी (द)

प्र:5 'दुर्लभ बंधु' रचना के अनुसार सच्चा प्रेमी कौन सी पेटी को छूता है।

(अ) लोहे की पेटी (ब) सोने की पेटी

शेखावाटी मिशन–100

(स) ताँबे की पेटी (द) चाँदी की पेटी (अ)

प्र:6 'बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य क्या है ?

(अ) शिक्षा ग्रहण की सही उम्र (ब) व्यक्ति के विकास हेतु शिक्षा देना

(स) मनुष्य और मनुष्यता को बचाए रखना (द) उपर्युक्त सभी **(द)**

प्र:7 बालक ने वृद्ध महाशय, से इनाम में क्या माँगा ?

(अ) पुस्तक (ब) खेल का सामान

(स) पेन (द) लड्डू **(द)**

प्र:8 'घड़ी के पुर्जे' के आधार पर धर्म का उद्देश्य क्या है।

(अ) मानव मात्र का हित करना (ब) धर्म पर मुट्ठीभर लोगों का अधिकार हो

(स) धर्म का रहस्य जाने बिना उसका पालन करें (द) विधर्मी का विनाश **(अ)**

प्र:9 धर्म का रहस्य जानने का अधिकार किसको होना चाहिए?

(अ) धर्माचार्यों को (ब) वेदशास्त्रज्ञों को

(स) आम आदमी को (द) धर्म उपदेशकों को **(स)**

लघुत्तरात्मक प्रश्न (उत्तर सीमा 40 शब्द)

प्र:1 'बालक बच गया' शीषर्क लघू निबंध में निहित व्यंग्य को स्पष्ट करते हुए बताइए की ऐसी शिक्षा पद्धति से कैसे बचा जा सकता है।

उत्तर– निबंध में लेखक ने अपने जीवन के अनुभव को हमारे सामने अत्यंत व्यावहारिक रूप में रखा है। आठ वर्ष के बालक को शिक्षा के नाम पर कठिन प्रश्नों का उत्तर रटवाया जाता है, जिसका शायद वह अर्थ भी नहीं जानता। इस कारण उसकी स्वभाविक प्रवृति का हनन होता है उसके बनावटी पन बढ़ जाता है। लेखक ने बताने की कोशिश की है। कि हमे बच्चों पर लादना नहीं चाहिए बल्कि उसके मस्तिष्क में शिक्षा के प्रति रूची पैदा करने वाले गुणों का विकास करना चाहिए।

प्र:2 लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए 'घड़ी के पुर्जे का' दृष्टान्त क्यों दिया?

उत्तर–धर्म उपदेशक अपने कथन को घड़ी के दृष्टान्त से समझाते है घड़ी समय जानने के लिए होती है। यदि स्वयं घड़ी देखना नहीं आता तो किसी जानकार व्यक्ति से समय पूछ लो। घड़ी ने वह समय क्यों बताया, इस रहस्य को जानने के लिए तुम घड़ी के पुर्जो को खोलकर उन्हें फिर जमाने की चेष्टा मत करो। ऐसा करने पर तुम्हें निराशा हाथ लगेगी। ठीक इसी तरह धर्म के बारे में जो बताया जा रहा है, उसे चुप– चाप सुनलो, उसके बारे में तर्क–वितर्क और प्रश्न मत करो। धर्म का रहस्य पत्ता करना उसी प्रकार तुम्हारा काम नहीं है, जैसे घड़ी को खोलकर उसके पुर्जे लगाना तुम्हारे वश की बात नहीं। इसी कारण लेखक ने धर्म का रहस्य जानने के लिए घड़ी के पुर्जे का दृष्टान्त दिया है।

प्र:3 "धर्म का रहस्य जानना सिर्फ धर्माचार्यों का काम नहीं। कोई भी व्यक्ति अपने स्तर पर उस रहस्य को जानने का हकदार है, अपनी राय दे सकता है।" टिप्पणी कीजिए।

उत्तर– धर्म पर कुछ मुट्ठीभर लोगों का एकाधिकार निश्चित रूप से संकुचित अर्थ प्रदान करता है। ये मुट्ठीभर लोग नहीं चाहते

शिक्षावाणी मिशन–100

कि धर्म का रहस्य हर कोई जान ले। ऐसा होने पर एकाधिकार छिन जायेगा, उनके स्वार्थ सिद्ध नहीं हो पायेंगे किन्तु जब धर्म का सम्बन्ध आम आदमी से जुड़ जायेगा और वह धर्म के रहस्य से परिचित हो जायेगा तो निश्चय ही धर्म उसके विकास में सहायक होगा।

प्र:4 वैदिककाल में हिन्दुओं में कैसी लाटरी चलती थी, जिसका जिक्र लेखक ने किया है ?

उत्तर– वैदिक काल में योग्य पत्नी चुनने के लिए वर विभिन्न स्थानों की मिट्टी से बने ढ़ेले कन्या के समक्ष रखता था और उनमें से कोई एक ढ़ेला चुनने को कहता। वह जिस ढ़ेले को चुनती, उसकी मिट्टी जिस स्थान से ली गई थी, उसके आधार पर यह निर्धारित किया जाता था कि वह कन्या विवाहोपरान्त कैसे पुत्र को जन्म देगी। यदि अच्छे स्थान की मिट्टी का ढ़ेला चुनती तो अच्छी सन्तान को जन्म देगी और यदि बुरे स्थान की मिट्टी का ढ़ेला चुनती है तो बुरी संतान को जन्म देगी। इस प्रकार वैदिक काल में हिन्दू ढ़ेले– छुआकर पत्नी वरण करते थे। यह एक प्रकार की लाटरी थी जिसका जिक्र लेखक ने यहाँ किया है।

प्र:5 'ढ़ेले चुन लो' कहानी के माध्यम से लेखक क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर– यह लघुकथा रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों का विरोध करती है और यह संदेश देती है कि हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करके जीवन से संबंधित निर्णय लेने चाहिए। पत्नी का चुनाव आँख–कान से देख–सुनकर करना ज्यादा अच्छा है न कि ढ़ेले स्पर्श करवाकर वैदिक रीति से जीवन साथी का चुनाव करना। ज्योतिषीय गणनाओं के द्वारा जीवन साथी का चुनाव करने की अपेक्षा अपनी बुद्धि का उपयोग करते हुए चुनाव करना लेखक बेहतर मानता है।

प्र:6 पण्डित चन्द्र धर शर्मा गुलेरी का साहित्यिक परिचय लिखो–

उत्तर– पण्डित चन्द्रधर शर्मा का जन्म सन् 1883 ई. में पुरानी बस्ती, जयपुर में हुआ। वे संस्कृत के प्रकाण्ड पण्डित, बहुभाषाविद, प्राचीन इतिहास और पुरातत्ववेत्ता, भाषा–विज्ञानी, लेखक और समालोचक थे। गुलेरी जी ने लेखन के लिए खड़ी बोली हिन्दी को अपनाया। उनकी भाषा सरल, सरस और विषयानुकूल है।

प्रमुख कृतियाँ– कहानियाँ – सुखमय जीवन, बुद्धु का काँटा, उसने – कहा था। सिर्फ उसने कहा था, कहानी से गुलेरीजी हिन्दी कहानीकारों में अमर हो गये हैं।

सम्पादन – 1. समालोचक (1903–06 ई.), 2. मर्यादा (1911–12 ई.), 3. प्रतिभा (1918–20 ई.), 4. नागरी प्रचारिणी पत्रिका (1920–22 ई.)

सम्मान– गुलेरीजी को 'इतिहास दिवाकर' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

निबन्धात्मक प्रश्न–

प्र:1 निम्न गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर– धर्म के रहस्य की जानने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य न करे जो कहा जाए वही कान ढ़लकाकर सुन ले, इस सत्ययुगी मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टान्त बहुत तालियाँ पिटवाकर दिया जाता है। घड़ी समय बतलाती है। किसी घड़ी देखना जाननेवाले से समय पूछ लो और काम चला लो। यदि अधिक करो तो घड़ी देखना स्वयं सीख लो किन्तु तुम चाहते हो कि घड़ी का पीछा खोलकर देखें, पुर्जे गिन लें, उन्हें खोलकर फिर जमा दे साफ करके फिर लगा ले– यह तुमसे

शेखावाटी मिशन–100

नहीं होगा। तुम उसके अधिकारी नहीं। यह तो वेद– शास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जाने, तुम्हे इससे क्या ? क्या इस उपमा से जिज्ञासा बन्द हो जाती है?

सन्दर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ पण्डित चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरीजी' द्वारा रचित पाठ 'सुमिरिनी के मनके' से ली गई है। यह अंश इस पाठ के दूसरे खण्ड 'घड़ी के पूर्जे से उद्धृत किया गया है। जिसे हमारी पाठ्य–पुस्तक अन्तरा भाग–2 में संकलित किया गया है।

प्रसंग– धर्म का उपदेश देने वाले विद्वान घड़ी का उदाहरण देकर धर्म के विषय में बताते है घड़ी में केवल समय देखो। उसको खोलकर मत देखो। धर्म के उपदेश सुनो, उस पर तर्क मत करो।

व्याख्या – धर्मोपदेशक प्रायः यह कहा करते हैं कि तुम्हे धर्म के बारे में जो कुछ बताया जाये उसे चुपचाप कान खोलकर सुन लो, उस पर कोई टीका–टिप्पणी मत करो, कोई जिज्ञासा न करो। क्योंकि तुम्हे धर्म का रहस्य जानने की कोई आवश्यकता नहीं। इस धर्म रूपी घड़ी का उपयोग तुम्हें केवल समय जानने के लिए करना है न कि घड़ी को पीछे से खोलकर उसके पुर्जों को देखने, खोलने, साफ करने या पुनः जोड़ने की जरूरत है। जब धर्मोपदेशक धर्म की तुलना घड़ी से करते हैं, तो श्रोता ताली बजाकर उनका समर्थन करते हैं। इस प्रकार तालियाँ पिटवाकर उपदेशक लोगों के मन में धर्म का रहस्य जानने के लिए उठी जिज्ञासा को बेमानी बताकर उसे शांत करना चाहते हैं। किन्तु वास्तव में ऐसा होता नहीं है। हर व्यक्ति के मन में धर्म का रहस्य जानने की कुछ जिज्ञासा रहती है। साथ ही जो शंकाएँ मन में उठती है उनका वह समाधान भी करना चाहता है।

विशेष–

(i) लेखक ने धर्मोपदेशकों की प्रवृति पर प्रकाश डाला है।

(ii) उपदेशक धर्म की उपमा घड़ी से देते हैं।

(iii) भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण खड़ी बोली हिन्दी है।

(iv) उपदेशात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–3

फणीश्वरनाथ 'रेणु' (संवदिया)

प्र:1 संवदिया कहानी एक जीवंत चित्रण है?

(अ) नारी मन के दुःख और करुणा की (ब) बाल मन के दुःख व करुणा की

(स) पुरुष मन के दुःख और करूणा की (द) बजुर्ग मन के दुःख व करुणा की (अ)

प्र:2 बड़ी बहुरिया की टूटी ड्योढी के द्वारा लेखक ने इशारा किया है?

(अ) समाज का सांस्कृतिक पतन (ब) पतनशील सांमती व्यवस्था

(स) समाज को वैचारिक पत्तन (द) आर्थिक पत्तन (ब)

प्र:3 "आगे नाथ न पीछे पगहा" मुहावरे का क्या अर्थ है?

(अ) बहुत अधिक डर जाना (ब) जानकारी प्राप्त करना

(स) कोई जिम्मेदारी ना होना (द) नुकसान हो जाना (स)

प्र:4 "उधार का सौदा खाने में बड़ा मीठा लगता है" यह कथन संवदिया कहानी में किसने कहा?

(अ) बड़ी बहुरिया ने (ब) हरगोबिन ने

(स) गुल मुहम्मद आगा ने (द) मोदिमाइन ने (द)

प्र:5 'संवदिया' फणीश्वरनाथ रेणु की किस प्रकार की कहानी है?

(अ) ऐतिहासिक कहानी (ब) मनोवैज्ञानिक कहानी

(स) सांस्कृतिक कहानी (द) आंचलिक कहानी **(द)**

प्र:6 हरगोबिन संवदिया कहाँ से संवाद लेकर गया ?

(अ) जलालगढ से बिहपुर (ब) बिहपुर से जलालगढ

(स) जलालगढ से खगड़िया (द) खगड़िया से जलालगढ **(अ)**

प्र:7 माँ ने बड़ी बहुरिया के लिए क्या भेजा था?

(अ) फल (ब) दही–चूड़ा

(स) बासमती धान का चूड़ा (द) उपर्युक्त सभी **(स)**

प्र:8 फणीश्वर नाथ 'रेणू' को हिन्दी में किस रूप में जाना जाता है।

(अ) ऐतिहासिक कथाकार (ब) सामाजिक कथाकार

(स) आंचलिक कथाकार (द) मनोवैज्ञानिक कथाकार **(स)**

लबुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

प्र:1 फणीश्वरनाथ 'रेण' के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए?

उत्तर – फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार राज्य के पूर्णिया जिले के औराही–हिंगना नामक गाँव में वर्ष 1921 में हुआ। रेणु ने वर्ष 1942 के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में भाग लिया। नेपाल के राणाशाही विरोधी आंदोलन में भी उनकी सक्रिय रहे। 'रेणु' का निधन 1977 ई में हुआ। रेणु जी, की रचनाओं में ग्रामीण जीवन, संस्कृति व आंचलिक जीवन को मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया।

प्रमुख रचनाएँ – उपन्यास मैला आँचल, परती परिकथा, कितने–चौराहे कहानी संग्रह–ठुमरी, एक आदिम रात्रि की महक, अग्निखोर रिपोर्ताज–ऋणजल–धनजल, नेपाली क्रांति कथा।

प्र:2 'संवदिया' कहानी में 'रेणु' ने मानवीय संवेदनाओ की गहरी पहचान, व नारी के प्रति दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया हैं स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – संवदिया कहानी में फणीश्वरनाथ 'रेणु' ने मानवीय संवेदनाओं की गहरी तथा अत्यन्त अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है इस कहानी में लेखक ने नारी के असहाय, सहनशील, मन की कोमल भावनाओं उसके दुःख दर्द, करूणा को अत्यंत हृदय स्पर्शी ढंग से आदि पात्रों के माध्यम व्यक्त किया है हरगोबिन तथा बड़ी बहु आदि पात्रों के माध्यम से लेखक ने प्रदेश के दुःखी और बेसहारा पात्रों के दुःख–वेदना को अपनी पूरी सहानुभूति के साथ अभिव्यक्त किया है। साथ ही लेखक

शेखावाटी मिशन–100

ने परिवार के बँटवारे और समाप्त होते हुए मानवीय संबंधों का चित्रण भी किया है।

प्र:3 संवदिया की क्या विशेषताएँ है और गाँव वालों के मन में संवदिया की क्या अवधारणा है?

उत्तर–संवाद के प्रत्येक शब्द को याद रखना तथा जिस सुर और स्वर में संवाद सुनाया गया है, ठीक उसी ढंग से जाकर सुनाना संवदिया की विशेषताएँ है । यह सहज काम नहीं है। गाँव वालो की संवदिया के विषय में धारणा है कि निठल्ला, कमजोर, और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता है, बिना मजदूरी लिए गाँव–2 संवाद पहुँचाता है। औरतो की मीठी बोली सुनकर ही उनका संदेशवाहक बन जाता है। हरगोबिन को इसीलिए गाँववाले औरतो का गुलाम भी कहते है।

प्र:4 बड़ी बहुरिया का संवाद हरगोबिन क्यों नहीं सुना सका ?

उत्तर– बड़ी बहुरिया पूरे गाँव की लक्ष्मी थी। यदि वह बड़ी बहुरिया की विपत्ति कथा उसकी माँ से कहता तो वह उसे उसके पास बुला लेती जिससे पूरे गाँव की बदनामी होती । गाँव की लक्ष्मी गाँव छोड़कर चली जायेगी तब गाँव मे क्या रह जाएगा। सुनने वाले हरगोबिन का नाम लेकर थूकेंगे। कैसा गाँव है, जहाँ लक्ष्मी जैसी बहुरिया दुःख भोग रही है। इसी कारण हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संवाद उसकी माँ को नहीं सुना सका।

प्र:5 'डिजिटल इंडिया' के दौर में संवदिया की क्या भूमिका हो सकती है ?

उत्तर–पुराने समय मे जब आवागमन के साधन बहुत कम थे। सूचनाओं के आदान–प्रदान की व्यवस्था नहीं थी । उस समय गाँवों में अपना समाचार भेजने के लिए संवदिया होता था संवदिया एक संदेशवाहक होता था जो संवाद को बोलकर संदेश पहुँचाता था। वर्तमान में डिजिटल इंडिया होने पर संचार के अनेकानेक माध्यम विकसित हो गए है। जो किसी समाचार को दृश्य श्रव्य माध्यम से दुनिया के किसी भी कोने में क्षणभर में पहुंचा देते है। अतः 'डिजिटल इंडिया' में संवदिया की प्रत्यक्षतः कोई भूमिका नजर न आती है। लेकिन संवदिया एक विश्वसनीय व्यक्ति होता है अतः विशेष क्षेत्रों व परिस्थितियों में तथा परम्परा के अनुसार संवदिया का आज भी महत्व है।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:6 निम्नलिखित गद्यांश की व्याख्या कीजिए।

संवदिया डटकर खाता है और अफर कर सोता है, किन्तु हरगोबिन को नींद नहीं आ रही है। यह उसने क्या किया? क्या कर दिया? वह किसलिए आया था? वह झूठ क्यों बोला? नहीं.....नहीं, सुबह उठते ही वह बूढी माता को बड़ी बहुरिया का दिया सही संदेश सुना देगा – अक्षर–2 मायजी, आपकी इकलौती बेटी बहुत कष्ट में है। आज ही किसी को भेजकर बुलवा लिजिए। नहीं तो वह सचमुच कुछ कर बैठेगी। आखिर, किसके लिए वह इतना सहेगी।..... बड़ी बहुरिया ने कहा है, भाभी के बच्चों की जूठन खाकर वह एक कोने में पड़ी रहेगी।

संदर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ 'संवदिया' नामक कहानी से ली गई है। यह आंचलिक कहानी 'फणीश्वरनाथ रेणु' द्वारा रचित है और इसे हमारी पाठ्य पुस्तक 'अंतरा भाग –2' में संकलित किया गया है।

प्रंसग–बड़ी बहुरिया का संदेश लेकर हरगोबिन संवदिया उसकी बूढी माँ के गाँव पहुँचा। उसके सामने सुस्वाद भोजन की थाली रखी गई पर उससे खाया न गया। बार–बार आँखो के सामने बड़ी बहुरिया की करुण मूर्ति आ जाती है। साथ ही उसे इस बात की भी पीड़ा थी कि उसने संवदिया का कर्त्तव्य पूरा नहीं किया इन पंक्तियो मे उसके इसी

रेखावली मिशन–100

मानसिक अंतर्द्वन्द्व की अभिव्यक्ति हुई है।

व्याख्या–संवदिया का विशेष आदर–सत्कार होता है। अच्छा एवं स्वादिष्ट भोजन वह पेट भर कर खाता है पर हरगोबिन संवदिया से आज न तो भर पेट भोजन किया गया और न ही नींद आ रही है। बार–बार उसे लगता है कि उसने बड़ी बहू का संदेश माँ जी को न सुनाकर अपराध किया है। बड़ी बहु ने बड़ी आशा और विश्वास से उसे भेजा था पर उसने कर्त्तव्य का निर्वाह नहीं किया। वह यहाँ बड़ी बहुरिया के कष्टों का समाचार देने आया था पर यहाँ आकर उसने झूठ क्यों बोला कि वहाँ सब ठीक–ठाक है और हवेली में बड़ी बहुरियां कुशल से है जबकि बड़ी बहुरिया भोजन न मिलने के कारण बथुआ साग खाकर जैसे–तैसे गुजारा कर रही थी वह सोचता है कि वह सुबह उठकर माँ जी को सब बता देगा कि आपकी बेटी वहाँ पर परेशान है और आप जल्दी उसे, अपने पास बुला ले अन्यथा वह अपने आप को कुछ कर लेगी आखिर कब तक वह बथुआ साग खाकर जीवित रहेगी एवं वह इतना कष्ट किसके लिए सहेगी। उसने तो यह संदेश दिया है कि मुझे शीघ्र बुला लें। मैं भाभी के बच्चों की जूठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी। संवदिया ने अपने कर्तव्य का पालन नहीं किया इसीलिए संवदिया की आंखो से नींद गायब हो गई।

विशेष–

(i) प्रस्तुत अवतरण में हरगोबिन के अंतर्द्वन्द्व का चित्रण है।

(ii) हरगोबिन को यह अपरोध बोध हो रहा था कि उसने बड़ी बहुरिया का संदेश माँ जी को न सुनाकर बहुत बड़ी भूल की है।

(iii) भाषा सरल, सहज व प्रवाहपूर्ण हिन्दी है।

(iv) शैली – मनोविश्लेषण शैली का प्रयोग किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–4

भीष्म साहनी (गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात)

प्र:1 'भीष्म साहनी' का यास्सर अराफात से परिचय कहाँ हुआ था?

(अ) टयूनिस (ब) स्वीडन (स) मलेशिया (द) पेरिस (अ)

प्र:2 'गांधी नेहरू यास्सर अराफात' पाठ की विद्या क्या है?

(अ) कहानी (ब) रिपोर्ताज (स) संस्मरण (द) यात्रावृतांत (स)

प्र:3 अफ्रो–एशियाई लेखक संघ का सम्मेलन कहाँ हुआ था?

(अ) स्वीडन (ब) ट्यूनिस (स) मुम्बई (द) कश्मीर (ब)

प्र:4 भीष्म साहनी के भाई 'बलराज साहनी' किस सह–संपादक थे?

(अ) कल्पना (ब) नयी तालीम (स) समन्वय (स) मतवाला (ब)

प्र:5 गांधी जी के निजी सचिव कौन थे?

(अ) महादेव गोविंद रानाडे (ब) डॉ नय्यर

(स) मिस्टर ऑन (द) महादेव देसाई (द)

प्र:6 "गाँधी, नेहरू और यास्सेर अराफात" पाठ साहनी की किस रचना का अंश है?

(अ) पहला पाठ (ब) भटकती राख

(स) आज के अतीत (द) भाग्य रेखा **(स)**

प्र:7 सेवाग्राम में लेखक किसके सानिध्य में रहे ?

(अ) जवाहरलाल नेहरू (ब) यास्सेर अराफात

(स) महात्मा गाँधी (द) बलराज **(स)**

प्र:8 जवाहरलाल नेहरू के साथ लेखक की मुलाकात कहाँ हुई ?

(अ) सेवाग्राम (ब) फिलिस्तीन

(स) काश्मीर (द) मास्को **(स)**

प्र:9 काश्मीर में बातो ही बातों में नेहरू जी की धर्म के बारे में किससे बहस छिड़ गई?

(अ) भीष्म साहनी से (ब) रामेश्वरी नेहरू से

(स) शेख अब्दुला से (द) यास्सेर अराफात से **(ब)**

प्र:10 यास्सेर अराफात किस भारतीय नेता को आदरणीय मानते थे?

(अ) गाँधीजी (ब) लाल बहादुर शास्त्री

(स) सुभाष चन्द्र बोस (द) नेहरू **(अ)**

प्र:11 किस उपन्यास के लिए भीष्म साहनी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ?

(अ) झरोखे (ब) कड़ियाँ

(स) बसंती (द) तमस **(द)**

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न –

(i) भीष्म साहनी के संस्मरण के आधार पर यास्सेर अराफात के आतिथ्य पर प्रकाश डालिए–

उत्तर– भीष्म साहनी और उनकी पत्नी को यास्सेर अराफात में भोजन के लिए आमंत्रित किया, बाहर आकर उनका स्वागत किया तथा चाय की मेज पर वे स्वयं फल छीलकर उन्हें खिलाते रहे। उन्होंने शहद की चाय उनके लिए स्वयं बनाकर दी। यही नहीं जब भीष्म जी शोचालय से निकले तो यास्सेर अराफात स्वयं तौलिया लेकर दरवाजे पर खडे, रहे जिससे भीष्म जी हाथ पोंछ सकें। ये घटनाएँ उनके आतिथ्य प्रेम की प्रमाण है।

(ii) लेखक सेवाग्राम कब और क्यों गया था ?

उत्तर–लेखक (भीष्म साहनी) अपने भाई बलराज साहनी के पास कुछ दिनों तक रहने के लिए सेवाग्राम गए थे जो उस समय वहाँ से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नयी तालीम' के सह–सम्पादक थे। यह सन 1938 के आस पास की बात है जिस साल कांग्रेस का हरिपुरा अधिवेशन हुआ था।

(iii) लेखक ने सेवाग्राम में किन–किन लोगो के आने का जिक्र किया है?

अत्तर–वहाँ पृथ्वी सिंह आजाद, जो प्रसिद्ध क्रांतिकारी थे। लेखक ने वहाँ मीराबेन व सीमांत गाँधी के नाम से विख्यात खान अब्दूल गफ्फार खान और बाबू राजेन्द्र प्रसाद को भी देखा था। इन सबका जिक्र लेखक ने इस संस्मरण में किया है।

शेखावाटी मिशन–100

(iv) फिलिस्तीन के प्रति भारत का रवैया बहुत सहानुभूति पूर्ण एवं समर्थन भरा क्यों था ?

उत्तर–भारत की विदेश नीति अन्याय का विरोध करने की रही है। साम्राज्यवादी शक्तियों ने फिलिस्तीन के प्रति जो अन्यायपूर्ण रवैया अपनाया हुआ था उसकी भर्त्सना भारत के नेताओ द्वारा की गयी थी। भारत के नागरिको ने भी इसी कारण फिलिस्तीन और उसके नेता यास्सेर अराफात के प्रति अपनी सहानुभूति दिखायी और समर्थन व्यक्त किया। फिलिस्तीन हमारा मित्र देश है तथा यास्सेर अराफात का भारत में बहुत सम्मान था।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्र:1 गंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उन्हीं दिनों सेवाग्राम में अनेक जाने–माने देशभक्त देखने को मिले। पृथ्वीसिंह आजाद आए हुए थे जिनके मुँह से वह सारा किस्सा सुनने को मिला कि कैसे उन्होंने हथकड़ियों समेत, भागती रेलगाड़ी में से छलाँग लगाई और निकल भागने में सफल हुए और फिर गुमनाम रहकर बरसों तक एक जगह अध्यापन कार्य करते रहे। उन्हीं दिनों वहाँ पर मीरा बेन थी, खान अब्दुल गफ्फार खान आए हुए थे, कुछ दिल के लिए राजेंद्र बाबू भी आए थे। उनके रहते यह नहीं लगता था कि सेवाग्राम दूर पार का कस्बा हो।

उत्तर– **संदर्भ–** यह गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा (भाग–2) भीष्म साहनी द्वारा रचित आत्मकथा 'आज के अतीत' से अवतरित है।

प्रसंग – लेखक साहनी जी कुछ दिन तक गाँधी जी के आश्रम सेवाग्राम में रहे यहाँ वहीं के अनुभवों का जिक्र किया है।

व्याख्या – लेखक जिन दिनों सेवाग्राम में था, उन्हीं दिनों कई देशभक्त भी वहाँ थे। लेखक को उन्हें देखने का अवसर मिला। वहाँ प्रसिद्ध वीर पृथ्वी सिंह आजाद भी आए हुए थे। उनकी बहादुरी के चर्चे उन दिनों चर्चा में थे। उनकी बहादुरी का किस्सा लेखक को इन्हीं के मुँह से सुनने को मिला। उन्होने बताया वे हथकड़ियों सहित चलती रेलगाड़ी से छलांग लगाकर भाग निकलने में सफल रहे थे। फिर गुमनामी में रहकर एक जगह पढ़ाने का काम करते रहे। उन दिनों आश्रम में मीराबेन खान अब्दुल गफ्फार खान तथा राजेंद्र बाबू थे। उनके रहने से वहाँ खूब चहल–पहल रहती थी। तब सेवाग्राम महत्त्वपूर्ण स्थान बन गया था और दूर का कस्बा प्रतीत नहीं होता था।

विशेषः– (i) लेखक ने सेवाग्राम के बारे में अपने अनुभव बताए है।

(ii) पृथ्वीसिंह आज़ाद के वीरतापूर्ण कारनामों की झलक है।

(iii) भाषा सरल एवं सुबोध है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–5

असगर वजाहत (शेर, पहचान, चार हाथ, साझा)

प्र:1 'शेर' लघु कथा में शेर किसका प्रतीक है।

(अ) राजा का (ब) प्रजा का (स) व्यवस्था का (द) आमजनता का (स)

प्र:2 जागरूक जनता के प्रतीक कौन थे?

(अ) खैराती, रामू, छिद्दू (ब) राजा, शंकर, छिद्दू

(स) शंकर, भुवन, रामू (द) आम जनता और राजा (अ)

प्र:3 राजा द्वारा जनता के आँख कान व मुँह बंद करवाने का वास्तविक उद्देश्य क्या था ?

(अ) जनता को निरकुंश बनाना (ब) जनता को अधिक अधिकार प्रदान करना

(स) जनता को गुमराह करके स्वंय निरकुंश बनना (द) अच्छी तरह से प्रजा का पालन–पोषण करना (स)

प्र:4 'साझा' लघुकथा में हाथी किसका प्रतीक है।

(अ) राजा का (ब) प्रभावशाली वर्ग का (स) प्रजा को (द) किसान का (ब)

प्र:5 'चार हाथ' कहानी उजागर करती है?

(अ) बाल मजदूरी (ब) मजदूरों का शोषण

(स) भष्ट्राचार (द) नारी अत्याचार (ब)

प्र:6 राज्य को कैसी प्रजा पसन्द है–

(अ) मेहनती (ब) कामचोर

(स) बहरी, गूँगी और अंधी (द) आज्ञाकारी **(स)**

प्र:7 हाथी ने किसान के साथ साझे में खेती की–

(अ) मक्का की (ब) ईख की

(स) ज्वार की (द) बाँस की **(ब)**

प्र:8 लोग शेर कहानी में रोजगार प्राप्त करने के लिए जा रहे थे–

(अ) राजा के पास (ब) शेर के मुँह में

(स) खेत में (द) हाथी के पास **(ब)**

लघुत्तरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्नः–

प्र:1 कहानी में लेखक ने शेर को किस बात का प्रतीक बताया है ?

उत्तर–कहानी में शेर को लेखक ने शासन–सत्ता का प्रतीक बताया है। सत्ता अहिंसक और सहःअस्तित्ववादी होने का दावा करती है। उसने भ्रम फैला रखा है कि वह जनता की हित चिन्तक है। इसी कारण जनता उस पर विश्वास करके उसकी बात मानती है। कुछ स्वार्थवश भी उसका सहयोग करते है। सत्ता विरोध बर्दाश्त नहीं करती और विरोधी को ताकत के साथ कुचल देती है। वह जनहित के नाम पर अपना हित चाहती है।

शेखावाटी मिशन–100

प्र:2 शेर के मुँह और रोजगार के दफ्तर के बीच क्या अंतर है ?

उत्तर–शेर के मुंह में जो एक बार जाता है वह वापस कभी नहीं आता है। लेकिन दफ्तर मे तो लोग बार–बार चक्कर लगाते हैं अर्जी देते हैं। पर उन्हें नौकरी नहीं मिलती। शेर जानवरो को निगल लेता है। पर रोजगार दफ्तर नौकरी चाहने वालो को निगलता नहीं लेकिन उन्हें रोजगार प्रदान करके जीने का अवसर भी देता है। इस कथा से लेखक ने वर्तमान शासन व्यवस्था पर व्यंग्य किया है।

प्र:3 आंखे बंद रखने और आँखे खोलकर देखने के क्या परिणाम निकले ?

उत्तर–प्रजा के आँखे बंद रखने से धीरे–धीरे राजा का प्रभूत्व सर्वत्र व्याप्त हो गया और वह निरकुंश हो गया। जनता को राजा द्वारा किए जाने वाले अपने ही शोषण का पता न चला। जब प्रजाजनों– खैराती, राम छिद्दू ने आंख खोलकर देखा तो वे एक–दूसरे को न देख सके सर्वत्र राजा ही दिखाई दिया। अर्थात राजा ने उत्पादन के साधनो पर धीरे–धीरे अपना अधिकार जमा लिया और प्रजाजनो को भुलावे में रखकर ऐसा बना दिया कि अब वे एकजुट होकर उसके खिलाफ खड़े होने का दुस्साहस नहीं कर सके। पूंजीपति भी तो यही करता है।

प्र:4 चार हाथ न लग पाने पर मिल मालिक की समझ में क्या बात आई ?

उत्तर–मिल मालिक की समझ में यह बात आई कि इस तरह उत्पादन दूना नहीं किया जा सकता। उसने तय किया कि उत्पादन बढाने और खर्च उतना ही रखने के लिए मजदूरो की संख्या दुगुनी कर दी जाए और मजदूरी आधी कर दी जाए। उसने ऐसा ही किया और बेबस लाचार मजदूर आधी मजदूरी पर ही काम करने लगे।

प्र:5 हाथी ने खेत की रखवाली के लिये क्या घोषणा की ?

उत्तर–हाथी ने पूरे जंगल में घूमकर डुग्गी पीट आया कि गन्ने की खेती में उसका साझा है अतः कोई जानवर खेत को नुकसान न पहुंचाएं, नहीं तो अच्छा न होगा।

प्र:6 शेर कहानी में हमारी व्यवस्था पर जो व्यंग्य किया गया है, उसे स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर–शेर इस लघुकथा में व्यवस्था का प्रतीक है। लेखक ने इसके माध्यम से हमारी व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। झूठे प्रचार के माध्यम से शासन जनता को खुशहाली का झांसा देता है तथा जनता का कुछ भी भला नहीं होता है। सब कुछ शासको की जेब में समा जाता है। लोग तरह–2 के सपने दिखाते हैं। इसमें सुविधाभोगियो पर विशेष रूप से व्यंग्य किया गया है।

प्र:7 असगर वजाहत का साहित्यिक परिचय लिखों।

उत्तर–**<u>असगर वजाहत</u>**

जन्म – सन् 1946 फतेहपुर (उत्तरप्रदेश)।

प्रमुख रचनाएँ– दिल्ली पहुँचना है, स्विमिंग पूल, सब कहाँ कुछ, आधी बानी, मैं हिंदू हूँ (कहानी–संग्रह), फिरंगी लौट आए, इन्ना की आवाज, वीरगति, समिधा, जिस लाहौर नई देख्या तथा अकी (नाटक), सबसे सस्ता गोस्त (नुक्कड़ नाटक), रात में जागने वाले, पहर दोपहर तथा सात आसमान, कैसी आगि लगाई (उपन्यास) असगर वजाहत ने गजल की कहानी वृत्तचित्र का निर्देशन किया है तथा बूँद–बूँद धारावाहिक का लेखक भी किया।

प्र:8 'चार हाथ' लघु कथा शोषण पर आधारित व्यवस्था का पर्दाफाश करती है। स्पष्ट कीजिए।

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर – असगर वजाहत की लघु कथा 'चार हाथ' का उद्देश्य इस तथ्य को उजागर करना है कि मिल मालिक मजदूरों का शोषण करते है। वे उत्पादन बढ़ाने के लिये निर्दयता की सीमाओं का भी उल्लंघन कर जाते हैं। एक मिल मालिक ने सोचा कि यदि मजदूरों के चार हाथ हो तो उत्पादन दुगुना हो सकता है। तरह– तरह के उपाय करके उसने मजदूरों के चार हाथ लगाने का प्रयास किया पर सफलता न मिली।

उसने लोहे के हाथ जबरदस्ती मजदूरों के फिट करवा दिए परिणामतः उसने मजदूर मर गये। फिर उसने मजदूरी आधी कर दी। पूंजीपति संवेदनहीन है, वे अधिक से अधिक लाभ कमा रहे हैं और मजदूरों की लाचारी का फायदा उठा रहे हैं।

निबंधात्मक प्रश्न–

प्रः1 गंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

कुछ दिनों बाद मैंने सुना कि शेर अंहिसा और सह–अस्तित्ववाद का बड़ा जबरदस्त सर्मथक है इसलिए जगली जानवरों का शिकार नहीं करता। मैं सोचने लगा, शायद शेर के पेट में वे सारी चीजें है जिनके लिए लोग वहाँ जाते है और मैं भी एक दिन शेर के पास गया । शेर आँखे बंद किये पड़ा था और उसका स्टाफ ऑफिस का काम निपटा रहा था। मैंने वहाँ पूछा, "क्या यह सच है कि शेर साहब के पेट के अन्दर रोजगार का दफ्तर है?" बताया गया कि यह सच है।

उत्तर– **संदर्भ –** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'असगर वजाहत' जी की लघु कथा 'शेर' से ली गई है जो हमारी पाठ्यपुस्तक अंतरा (भाग 2) में संकलित है।

प्रसंग – जंगल में शेर के ऑफिस के बारे में लेखक ने सुना था शेर के पास जाने पर उसने क्या देखा इसका वर्णन यहाँ किया गया है।

व्याख्या– शेर का प्रचार तंत्र बहुत मजबूत था। उसने अपने बारे में प्रचारित करवाया कि वह अंहिसावादी हो गया है, वह सह–अस्तित्ववाद और अंहिसा का समर्थक हो गया है अब वह शिकार नहीं करता तो उससे डरने की कोई आवश्यकता नहीं है। लेखक विचार करने लगा कि हो सकता है कि शेर के पेट में हरी घास का मैदान, रोजगार का दफ्तर और स्वर्ग विद्यमान हो, जिसके प्रलोभन में फंसकर जंगली जानवर उसके मुँह में प्रवेश करते जा रहे है इसका पता लगाने लेखक एक दिन शेर के पास गया। लेखक का अभिप्राय यह है कि शासन व्यवस्था अपने विषय में जो कुछ कहती है उसे सच मान लेने के अतिरिक्त जनता के पास क्या चारा है। शेर के पेट में रोजगार दफ्तर है यह शेर के द्वारा प्रचारित किया गया झूठ था पर जंगल में इसे सत्य समझकर उसके मुँह में समाते जा रहे थे।

विशेषः–(i) शेर व्यवस्था का प्रतीक है।

(ii) शैली प्रतीकात्मक है।

(iii) भाषा सहज व प्रवाहपूर्ण है।

(iv) राज्य व्यवस्था जो झूठ–सत्य अपने बारे में प्रचारित करती है, उसे जनता मान ही लेती है।

शेखावाटी मिशन–100

पाठ–6

निर्मल वर्मा (जहाँ कोई वापसी नहीं)

प्र:1 'जहाँ कोई वापसी नहीं' पाठ की मूल संवेदन क्या है?

(अ) वृक्षारोपण की समस्या (ब) प्रदूषण की समस्या

(स) विस्थापन की समस्या (द) भष्ट्राचार की समस्या (स)

प्र:2 पेड़ों के एक सत्याग्रह का अनुभव लेखक को कहाँ हुआ?

(अ) सिंगरौली में (ब) मालवा में (स) धनबाद में (द) भाखड़ा में (अ)

प्र:3 'जहाँ कोई वापसी नहीं' निर्मल वर्मा द्वारा रचित. यात्रावृतान्त किस संग्रह से लिया गया है?.

(अ) राख की लहर (ब) धुंध से उठती धुन

(स) हर बगारिस में (द) चीड़ों पर चाँदनी (ब)

प्र:4 लेखक निर्मल वर्मा किस संस्था की तरफ से सिंगरोली गए थे?

(अ) दिल्ली विश्वविद्यालय (ब) वित्त मंत्रालय

(स) हम वत्तन संस्थान (द) लोकायन संस्था (द)

प्र:5 खैरवार जाति के राजा कब राज किया करते थे–

(अ) 1845 से पूर्व (ब) 1926 से पूर्व

(स) 1950 से पूर्व (द) 1905 से पूर्व **(ब)**

प्र:6 'जहाँ कोई वापसी नहीं।' पाठ में किस गाँव का उल्लेख है?

(अ) अमझर (ब) बिस्कोहर

(स) जलालगढ़ (द) जहाजपुर **(अ)**

प्र:7 आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहा गया है–

(अ) बंग्लादेशी (ब) पाकिस्तान से आए हिन्दू

(स) विस्थापित लोग (द) कोई नहीं **(स)**

प्र:8 लोकायन संस्था विकास कार्यों का जायजा लेने कहाँ गई थी–

(अ) सिंगरौली (ब) नया गाँव

(स) अमझर (द) बिस्कोहर **(अ)**

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

(i) अमझर से आप क्या समझते है? अमझर गाँव में सूनापन क्यों है ?

उत्तर–'अमझर' एक गाँव का नाम है जिसका अर्थ है– आम के पेड़ो से घिरा गाँव जहाँ आम झरते हैं। पिछले कुछ वर्षों से इन पेड़ो पर सूनापन है। न कोई फल लगता है न नीचे झरते है। कारण पूछने पर पता चला कि जब से सरकारी घोषणा हुई है कि अमरौली प्रोजेक्ट के अन्तर्गत नवागाँव के अनेक गाँव उजाड़ दिए जाएँगे तब से न जाने कैसे आम के पेड़

शेखावाटी मिशन–100

सूखने लगे। आदमी उजड़ेगा तो पेड़ जीवित रहकर क्या करेंगे।

(ii) आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किन्हें कहा गया हैं?

उत्तर–औधोगीकरण के कारण जिन लोगो को अपनी जमीन – घर छोड़कर जाना पड़ा, ऐसे विस्थापित लोग ही आधुनिक भारत के नए शरणार्थी कहलाए जाएंगे। अपने गाँव, घर, परिवेश से हटने के बाद लोगो को ऐसे नये स्थान तलाशने पड़ते है जहाँ वह शरण ले सके या रह सके।

(iii) औधोगीकरण ने पर्यावरण का संकट पैदा कर दिया है, क्यों और कैसे ?

उत्तर–औद्योगिकरण से विकास को तो गति मिलती है परन्तु पर्यावरण को हानि पहुंचती है। वनों की अँधाधुँध कटाई औधोगिक कचरे का निस्तारण तथा गैस उत्सर्जन के कारण उत्पन्न वायु प्रदूषण आदि अनेक समस्याएं पैदा हो सकती है। अनेक लोगों को अपने घर बार एवं परिवेश को छोड़कर विस्थापित होना पड़ता है। जिससे वे अपनी संस्कृति से कट जाते हैं। पेड़ो की अंधाधुंध कटाई से पर्यावरण का संकट उत्पन्न हो जाता है। बाढ जैसी प्राकृतिक विपदाएँ एवं भोपाल गैस त्रासदी जैसी दुर्घटनाएँ इस औद्योगीकरण की देन है। लेखक का मत यह है कि विकास होना तो चाहिए पर उस मॉडल पर नहीं जो हमने यूरोप की नकल पर आधारित योजनाएं बनाते हुए किया है।

(iv) निर्मल वर्मा का साहित्यिक परिचय लिखों।

उत्तर– **निर्मल वर्मा**

जन्म – सन् 1929 शिमला (हिमाचल प्रदेश)।

प्रमुख कहानी संग्रहः परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकांत, पिछली गरमियों में, कव्वे और काला पानी, बीच बहस में, सूखा तथा अन्य कहानियाँ। वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, अंतिम अरण्य (उपन्यास)। रात का रिपोर्टर जिस पर सीरियल तैयार किया गया है उनका प्रसिद्ध उपन्यास है। हर बारिश में, चीड़ों पर चाँदनी धुंध से उठती धुन में उनके यात्रा संस्मरण है। शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए (निबंध–संग्रह)।

पुरस्कार– साहित्य अकादमी पुरस्कार।

निधनः– सन् 2005

(v) सिंगरौली, के संबंध में क्या दंत कथा है, इसको 'काला पानी' क्यों माना जाता है?

उत्तर– एक दंत कथा के अंनुसार सिंगरौली नाम 'शृंगावली' पर्वतमाला से निकला है। यह पूर्व–पश्चिम में फैली है। सिंगरौली के चारों ओर घने जंगल है। इनके कारण तथा यातायात के साधन बहुत कम होने के कारण एक जमाने में लोग सिंगरौली में न जाते थे। और न वहाँ से बाहर जाते थे। अपने अपार सौन्दर्य के बावजूद इसको 'काला पानी' कहा जाता था क्योंकि वहाँ के लोगों का सम्पर्क बाहरी दुनिया से नहीं था।

(vi) यूरोप और भारत की पर्यावरण संबंधी चिंताएँ किस प्रकार भिन्न है।

उत्तर– (i) यूरोप में पर्यावरण का प्रश्न मनुष्य और भूगोल के बीच संतुलन बनाए रखने का है, जबकि भारत में यह प्रश्न मनुष्य

शेखावटी मिशन–100

और उसकी संस्कृति के बीच के नाजुक संतुलन को बनाए रखने का है।

(ii) यूरोप की सांस्कृतिक विरासत संग्रहालयों में सुरक्षित रही है, जबकि भारत की सांस्कृतिक विरासत उन रिश्तों में है जो उसको धरती, जंगलों, नदियों आदि समूचे परिवेश से जोड़ते है।

(vii) निर्मल वर्मा ने स्वातंत्र्योत्तर भारत की सबसे बड़ी ट्रेजडी किसे माना है और क्यों?

उत्तर– लेखक के अनुसार स्वतंत्रता के बाद भारत की सबसे बड़ी ट्रेजडी शासक वर्ग द्वारा विकास के लिए पश्चिमी देशों की देखादेखी व नकल करके बनाई गई योजनाओं से है, जो भारतीय संस्कृति एवं परिवेश से पूर्णतः भिन्न है। देश की आजादी के बाद हमारे अधिकतर प्रारंभिक नेता पश्चिमी देशों से शिक्षित थे। उन्होंने वहाँ की औधोगिक प्रगति देखी थी, किंतु वे यूरोप तथा भारत की सांस्कृतिक भिन्नता के कारण दोनों की सामाजिक प्रवृतियों का अंतर नहीं समझ सके। पश्चिम की नकल करते हुए औद्योगिक विकास की और अग्रसर हो गए। हम पश्चिम को मॉडल न बना कर अपनी शर्तों और मर्यादाओं के आधार पर भारतीय स्वरूप में औद्योगिक विकास कर सकते थे, जिसकी और नीति निर्धारकों ने ध्यान ही नहीं दिया।

<u>निबन्धात्मक प्रश्न–</u>

(i) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर– ये लोग आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है, जिन्हें औद्योगीकरण के झंझावत ने अपने घर–जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए निर्वासित कर दिया है। प्रकृति और इतिहास के बीच यह गहरा अंतर है। बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग अपना घर बार छोड़कर कुछ अरसे के लिए जरूर बाहर चले जाते है, किन्तु आफत टलते ही वे दोबारा अपने जाने पहचाने परिवेश में लौट भी आते है किंतु विकास और प्रगति के नाम पर जब इतिहास लोगो को उन्मूलित करता है तो वे फिर कभी अपने घर वापस नहीं लौट सकते। आधुनिक औधोगीकरण की आँधी में सिर्फ भनुष्य ही नहीं उखड़ता, बल्कि उसका परिवेश और आवास स्थल भी हमेशा के लिए नष्ट हो जाते है।

संदर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ निर्मल वर्मा के यात्रावृत 'जहाँ कोई वापसी नही' से ली गई है। इसे हमारी पाठ्य–पुस्तक 'अंतरा भाग–2' में संकलित किया गया है।

प्रसंग– व्यक्ति प्राकृतिक विपदाओं के कारण अपना घर बार छोड़कर कुछ समय के लिए विस्थापित होता है पर आधुनिक भारत में औद्योगिकरण के झंझावत ने तमाम लोगो को विस्थापित करके सदा के लिए शरणार्थी बनने को विवश कर दिया है।

व्याख्या–व्यक्ति को प्राकृतिक विपदाओं भूकम्प, बाढ आदि के कारण अपना घर बार छोड़कर थोड़े समय के लिए विस्थापित होकर कहीं अन्यत्र शरण लेनी पड़ती है। जैसे ही प्राकृतिक विपदा शांत हुई वे अपने पुराने घर में, पुराने परिवेश में लौट जाते है किंतु औद्योगीकरण के झंझावत (तूफान) से जो विस्थापन लोगों को झेलना पड़ता है। यह स्थायी किस्म का होता है। जिसमें व्यक्ति को सदा के लिए अपना घर–बार छोड़कर इधर–उधर शरण लेनी पड़ती है। औद्योगीकरण के कारण विस्थापित ये आधुनिक भारत के नए शरणार्थी है जिन्हें अपनी जमीन से अपने घर से सदा के लिए उखाड़कर निर्वासित कर दिया गया है। प्राकृतिक प्रकोप तो कुछ समय के लिए

रेखावली मिशन–100

होता है और जैसे ही वह समाप्त होता है विस्थापित लोग पुनः अपने घर में लौट आते हैं।

विशेष–

(i) औद्योगीकरण के कारण होने वाले लोगो के विस्थापन पर लेखक ने चिंता व्यक्त की है।

(ii) लेखक का दृष्टिकोण मानवीय एवं संवेदनशील है।

(iii) विकास और प्रगति का चेहरा मानवीय होना चारिए, यही लेखक कहना चाहता है।

(iv) भाषा सरल, सहज और प्रवाहपूर्ण है।

(v) शैली विवरणात्मक और विचारात्मक है।

लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–

पाठ–7

ममता कालिया (दूसरा देवदास)

(i) दूसरा देवदास कहानी में लेखिका ने किस परिवेश को केन्द्र में रखा है?

(अ) काशी (ब) मथुरा (स) हरिद्वार (द) अयोध्या (स)

(ii) 'दूसरा देवदास' कहानी में ब्यालू का क्या अर्थ है?

(अ) दोपहर का भोजन (ब) शाम का भोजन (स) शाम की आरती (द) सुबह का भोजन (ब)

(iii) स्पेशल आरती से लेखक का क्या आशय है?

(अ) एक सौ इक्यावन रूपये की आरती (ब) चंदन की थाली वाली आरती

(स) नींलाजली वाली आरती (घ) घी के दीपक वाली आरती (अ)

(iv) ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' का नायक है–

(अ) गौरव (ब) वंशीधर

(स) संभव (द) मोहन **(स)**

(v) संभव की लड़की से पहली मुलाकात कहाँ हुई –

(अ) हर की पोड़ी पर (ब) मंदिर में

(स) बाग में (द) बाजार में **(अ)**

(vi) "मनोकामना की गाँठ विचित्र है, इधर बाँधो और उधर लग जाती है" यह किसने सोचा–

(अ) पारो ने (ब) संभव ने

(स) नानी ने (द) पण्डित ने **(ब)**

(vii) 'दूसरा देवदास' कहानी में गंगापुत्र किसे कहा गया है–

(अ) गोताखोर (ब) भीखारी

(स) पण्डित (द) संभव **(अ)**

(viii) मनोकामना हेतु लाल पीले धागे कितने रुपये में बिक रहे थे–

शेखावाटी मिशन-100

(अ) दो रुपये (ब) पाँच रुपये

(स) सवा रुपये (द) तीन रुपये **(स)**

<u>लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न–</u>

(i) मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भूत अनूठी हैं, "इधर बाँधो उधर लग जाती है।" कथन के आधार पर पारो की मनोदशा का वर्णन कीजिए?

उत्तर– कल गंगा घाट पर लड़की की भेंट लड़के से हुई थी और पूजारी ने उन्हें पास खड़ा देखकर भ्रम से पति–पत्नी समझकर फलने–फूलने का आशीष भी दिया। लड़की छिटककर दूर खड़ी हो गई पर उन दोनों के मन में प्रेम का अंकुरण हो गया था। आज मंसा देवी के दर्शन करने के बाद लड़की ने मनोकामना पूरी होने की कलावे की जो गाँठ बाँधी थी लगता था उस गाँठ का असर हुआ और उसकी दुबारा मुलाकात हुई। वह सोचने लगी कि आज ही उसने गाँठ बाँधी थी और आज ही उसकी मुलाकात संभव से हुई उनका परिचय भी हुआ जब मन्नू ने अपनी बुआ का नाम पारो बताया तब संभव ने भी अपना नाम संभव देवदास बताया अर्थात वह पारो का देवदास है। पारों के मन में भी संभव के प्रति प्रेम उत्पन्न हो चुका।

(ii) 'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' एक प्रेमकथा है। कहानी का शीर्षक पात्र, घटना या स्थान के नाम पर रखा जाता है। वह आकर्षक, रोचक, संक्षिप्त एवं कौतूहलवर्धक भी होना चाहिए। संभव को पता चला कि जो लड़की गंगातट पर उसे पूजारी के पास मिली पूजारी ने उन्हें पति–पत्नी समझकर फलो–फूलो का आशीष दिया था उसका नाम पारो है तो उसने परिचय देते हुए अपना नाम बताया, संभव देवदास। पारो और देवदास शरत्‌चन्द्र के उपन्यास देवदास के पात्र है। इसीलिए इस कहानी का शीर्षक दूसरा देवदास पूरी तरह उपयुक्त है।

(iii) 'दूसरा देवदास' कहानी की मूल संवेदना क्या है।

उत्तर– 'दूसरा देवदास' कहानी में लेखिका 'ममता कालिया' ने हर की पौड़ी हरिद्वार की पृष्ठभूमि में युवा–मन की भावुकता, संवेदना तथा वैचारिक चेतना को अभिव्यक्त किया है। इसः कहानी में अचानक हुई मुलाकात के बाद युवा हृदय में कल्पना तथा रूमानियत के जो भाव उठते है उन्हें बखूवी प्रस्तुत किया है।

(iv) लेखिका ने गंगापुत्र किसे कहा है और क्यों?

उत्तर–गंगापुत्र उन गोताखोरों के लिए प्रयुक्त शब्द है जो भक्तो द्‌वारा गंगा में चढ़ाए गए पैसे गोता लगाकर निकाल लेते है अथवा पूजा के लिए गंगा में किश्ती की तरह तैराये गए दोनो में से पैसे बटोरते हैं। गंगा ही उनकी जीविका का साधन है। वे इसी क्षेत्र में पले–बढ़े है। गंगा ही इनकी माँ है अतः लेखिका ने इन्हें गंगापुत्र कहा है।

(v) हर की पौड़ी पर होने वाली गंगा जी की आरती का 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर भावपूर्ण वर्णन कीजिए।

उत्तर– हर की पौड़ी पर गंगा जी के अनेक मंदिर है। पंडित–पुजारी गंगा जी की आरती की तैयारी करने में व्यस्त है। पीतल की नीलांजलि (आरती) हजारो बत्तियाँ घी में भीगोकर रखी गई है। कुछ भक्तों ने स्पेशल आरती बोल रखी है अर्थात

शेखावाटी निशान–100

एक सौ इक्यावन रूपये वाली आरती। अचानक हजारों दीप जल उठते है आरती शुरू हो जाती है जय जय गंगे माता, जो कोई तुझको ध्याता। सारे सुख पाता, जय गंगे माता। फिर भक्तों का समवेत स्वर गूँजता है।

(vi) ममता कालिया का साहित्यिक परिचय लिखो ?

उत्तर– ममता कालिया

जन्म – सन 1940 मथुरा (उत्तर प्रदेश)।

प्रकाशित कृतियाँ–

बेघर, नरक दर नरक, एक पत्नी के नोट्स, प्रेम कहानी, लड़कियाँ, दौड़ (उपन्यास), हाल ही में दो कहानी संग्रह प्रकाशित – पच्चीस साल की लड़की, थियेटर रोड़ के कौवे।

प्रमुख पुरस्कार–

साहित्य भूषण 2004 में, कहानी समान 1989 में अभिनव भारती कलकता द्वारा रचना पुरस्कार एवं श्रेष्ठ कहानी पुरस्कार।

निबन्धात्मक प्रश्न–

(i) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

उत्तर–लड़की ने आज गुलाबी परिधान नहीं पहना था पर सफेद साड़ी में लाज से गुलाबी होते हुए उसने मंसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लेते हुए सोचा "मनोकामना की गाँठ भी अद्‌भूत, अनूठी है इधर बाँधो उधर लग जाती है पारो बुआ पारो बुआ इनका नाम है..." मन्नू ने बुआ का आँचल खींचते हुए कहा। "संभव देवदास" संभव ने हँसते हुए वाक्य पूरा किया। उसे भी मनो कामना का लाल पीला धागा और उसमें पड़ी गिठान का मधुर स्मरण हो आया।

संदर्भ– प्रस्तुत पंक्तियाँ ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' से ली गई है। यह कहानी हमारी पाठ्य पुस्तक 'अंतरा भाग–2' में संकलित है।

प्रसंग– हर की पौड़ी पर गंगा स्नान के बाद संभव को वहाँ एक लड़की मिली। दोनो को बहुत पास खड़ा देखकर और लड़की द्वारा प्रयुक्त 'हम' शब्द से पुजारी को दोनों का पति–पत्नी होने का भ्रम हुआ। उसने आशीर्वाद दिया। अगले दिन मंसादेवी मंदिर से लौटते समय वही लड़की अपने भतीजे के साथ संभव को मिली।

व्याख्या– कल उस लड़की ने गुलाबी वस्त्र पहने थे आज वह सफेद साड़ी में थी और लज्जा से गुलाबी हो रही थी। लड़की ने मंसा देवी के दर्शन कर मनोकामना पूरी होने की गाँठ बाँधी तो उधर संभव ने भी मनोकामना पूरी होने की गाँठ धागे से बांध दी। संभव को देखकर लड़की ने मन ही मन संकल्प लिया कि देवी पर एक चूनर और चढ़ाऊँगी। वह सोच रही थी कि मनोकामना की यह गाँठ कैसी अद्‌भूत व अनोखी है। इधर बाँधो उधर लग जाती है। लड़की के साथ आया छोटा भाई लड़का मन्नू उसका भतीजा था पहले ही हर की पोड़ी पर संभव से मिल चुका था और उसे अपना मित्र भी बना लिया।

विशेष–

शब्दावली मिशन–100

(i) विवरणात्मक शैली तथा सहज, सरल भाषा प्रयुक्त है।

(ii) 'दूसरा देवदास' एक प्रेम कहानी है। देवदास उपन्यास के नायक नायिका के जो नाम है वही इस कहानी के नायक–नायिकाओं के भी है।

(iii) संभव ने अपना नाम संभव देवदास बताकर यह बता दिया कि वह पारो से प्रेम करने लगा है। पारो व देवदास की प्रसिद्ध कहानी शरत बाबू के बगंला उपन्यास देवदास में है।

(ii) गंद्याश सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

भीड़ लड़के ने दिल्ली में भी देखी थी, बल्कि रोज देखता था। दफ्तर जाती भीड, खरीद–फरोख्त करती भीड़, तमाशा देखती भीड, सड़क क्रॉस करती भीड़। लेकिन इस भीड़ का अंदाज निराला था। इस भीड़ में एकसूत्रता थी। न यहाँ जाति का महत्व था, न भाषा का, महत्त्व उद्देश्य का था और वह सबका समान था, जीवन के प्रति कल्याण भावना। इस भीड़ में दौड़ नहीं थी, अतिक्रमण नहीं था और भी अनोखी बात यह थी कि कोई भी शरणार्थी किसी सैलानी आनंद में डुबकी नहीं लगा रहा था।

उत्तर–**संदर्भ** – प्रस्तुत गंद्याश पाठयपुस्तक अंतरा (भाग 2) में संकलित दूसरा देवदास से अवतरित है जो लेखिका ममता कालिया द्वारा रचित है।

प्रसंग – बैसाखी के दिन हर की पौड़ी पर एकत्रित हुई श्रद्धालुओं की भीड़ देखकर अंचभित संभव कहता है, ऐसा नहीं है कि उसने ऐसी भीड़ पहले कभी न देखी हो, बल्कि वह रोजाना ही दिल्ली में ऐसी ही भीड़ देखता है, जो दफ्तर जाती है, वस्तुओं को खरीदती–बचती है, किसी घटना पर तमाशबीन बनकर उसे देखती रहती है या फिर सड़क पार करती है ऐसी अनेक भीड़, उन सब भीड़ से अलग थी दिल्ली में देखी गई भीड़ बिखराव था, लेकिन इस भीड में एकसूत्रता की भावना थी। इसमें न जाति, न भाषा किसी आधार पर कोई भेदभाव न था, बल्कि सभी का एक उद्देश्य, एक लक्ष्य था। उससे भी महत्वपूर्ण बात गंगा के पवित्र जल में स्नान से अधिक स्वंय से आत्मसात होने की प्रक्रिया थी। जिसमें श्रद्धालु जितना अधिक ध्यान लगाते उत्तना ही अधिक स्वयं को अहम मुक्त, कुंठारहित अनुभव करते हैं।

विशेष – (i) भारतीय संस्कृति की विशेषता अनेकता में एकता का उल्लेख किया है।

(ii) वर्णनात्मक शैली

(iii) तत्सम शब्द मुक्त भाषा व प्रवाहपूर्ण भाषा

पाठ–8

हजारी प्रसाद द्विवेदी (कुटज)

(i) 'कुटज' निबंध में पृथ्वी का मानदण्ड किसे कहा गया है?

(अ) अरावली पर्वत (ब) हिमालय को (स) सतपुड़ा को (क) विध्याचल को (ब)

(ii) लेखक ने 'कुटज' के जीवन की तुलना किससे की है?

(अ) राजा पृथु से (ब) राजा जनक से (स) राजा दशरथ से (द) राजा हरिश्चंद्र से (ब)

(iii) "मनस्वी मित्र तुम धन्य हो" मनस्वी मित्र का प्रयोग किस लिए हुआ है?

शेखावाटी मिशन–100

(अ) कुंभज मुनि के लिए (ब) द्विवेदी के लिए

(स) कुटज के लिए (द) ऋषि मुनि के लिए (स)

(iv) कुटज नाम से किस मुनि को जाना जाता है?

(अ) नारद मुनि (ब) अगस्त्य मुनि (स) वशिष्ठ मुनि (द) पुलस्त्य मुनि (ब)

(v) हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली कितने भागों में संकलित है?

(अ) दस (ब) सात (स) ग्यारह (द) बारह (स)

(vi) हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपराजेय जीवन शक्ति का प्रतीक कहा है–

(अ) कनेर (ब) शीशम

(स) कुटज (द) बरगद **(स)**

(vii) 'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति' कथन है–

(अ) कालिदास (ब) याज्ञवल्क्य

(स) द्विवेदीजी (द) गाँधीजी **(ब)**

(viii) हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म हुआ– .

(अ) 1915 ई. (ब) 1907 ई.

(स) 1911 ई. (द) 1920 ई. **(ब)**

(ix) कुटज का वृक्ष पाया जाता है–

(अ) शिवालिक पर्वत श्रृंखला (ब) विन्ध्याचल

(स) अरावली (द) कैलाश पर्वत **(अ)**

<u>लघुतरात्मक व दीर्घउत्तरात्मक प्रश्न</u>–

(i) कुटज के वृक्ष की तीन विशेषताएं अपने शब्दों में लिखिए–

उत्तर–कुटज के वृक्ष पर्वत की काफी ऊँचाई पर मिलते हैं। वहाँ पानी की कमी है।

–भयंकर गर्मी में भी ये वृक्ष सरस (हरे–फरे) और फूलो से लदे रहते है। कुटज की जड़े पर्वत की चट्टानों को फोड़कर गहराई से पानी ग्रहण कर लेती है।

–कुटज की जीवनी–शक्ति दुरंत है। कठोर पथरीली जमीन, जल का आभाव, भीषण गर्मी में भी कुटज हरा–भरा व फूलो से लदा रहता है।

(ii) कुटज को 'गाढे का साथी' क्यों कहा गया है ?

उत्तर– 'गाढे का साथी' का तात्पर्य है कठिन समय में साथ देने वाला। गरमी में जब कोई और फूल पुष्पित दिखाई नहीं देता तब कुटज ही खिलता रहता है। कालिदास ने अपने काव्य 'मेघदूत' में लिखा है कि जब रामगिरि पर रहने वाले यक्ष ने अपनी प्रिया के पास सन्देश भेजने हेतु 'मेघ' को तैयार किया तो उसे कुटज पुष्प अर्पण किया। जब कोई दूसरा पुष्प उपलब्ध नहीं था, तब कुटज ही काम आया। इस कारण द्विवेदी जी ने उसे गाढे का साथी कहा है।

(iii) कुटज किस प्रकार अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है ?

शेखावाटी मिशन–100

उत्तर–कुटज विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रहकर अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा करता है। कठोर पाषाण को भेदकर, झंझा– तुफान को रगड़कर अपना भोजन प्राप्त कर लेता है। और भयंकर लू के थपेड़ो में भी सरस बना रहता है, खिला रहा है। प्राण ही प्राण को पुलकित करता है। जीवन शक्ति ही जीवन शक्ति को प्रेरणा देती है। कुटज की यही अपराजेय जीवनी शक्ति हमें उल्लासपूर्ण जीने की प्रेरणा देती है। चाहे सुख हो या दुख, अपराजित होकर उल्लास विकीर्ण करते हुए जीवित रहे यही कुटज का संदेश है।

(iv) 'कुटज' हम सभी को क्या उपदेश देता है? टिप्पणी कीजिए ?

उत्तर– कुटज हम सभी को अपराजेय जीवनी शक्ति का उपदेश देता है। कठिन परिस्थितियों में भी जिजीविषा के बल पर कुटज न केवल जी रहा है। अपितु हँस भी रहा है। न वह किसी को अपमानित करता है न ग्रहो की खुशामद करता है वह अवधूत की भाँति कह रहा है चाहे सुख हो या दुख प्रिय हो या अप्रिय, जो मिल जाए उसे अपराजित हृदय से सोल्लास ग्रहण करो, हार मत मानों।

(v) हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्यिक परिचय लिखों ।

उत्तर–

हजारी प्रसाद, द्विवेदी

जन्म सन् 1907, आरत दूबे का छपरा, बलिया (उत्तर–प्रदेश) में हुआ।

महत्वपूर्ण रचनाएँ –

अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व (निबंध –संकलन) बाणभट्ट की आत्मकाथा, पुनर्नवा, अनाम दास का पोथा (उपन्यास) सूर–साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका, कालिदास की लालित्य योजना। हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली (ग्यारह खंड) में संकलित है।

निधन– सन् 1979 में हुई।

(vi) "जीना भी एक कला है और कुटज इस कला को जानता है" पाठ के आधार पर कथन को समझाइए ।

उत्तर– आचार्य द्विवेदी ने तो जीने को कला से सभी बढ़कर एक तपस्या माना है। तपस्या में तल्लीनता और सहिष्णुता का होना आवश्यक होता है। गीता में कहा गया है 'सुख–दुःख समे कृत्वा लाभालाभौ, जयाजयौ।' यही जीवन जीने की जीने की कला बताता है। हिमालय कला है, रहस्य है। 'कुटज' हमें जीने की कला बताता है। हिमालय के ऊँचे पथरीले प्रदेश में, जहाँ घास भी भीषण गर्मी, लू और जलाभाव में सूख जाती है, वहाँ, कुटज हरा–भरा और फूलों से लदा रहता है। उसकी जड़े चट्टानों को तोड़कर गहराई से अपना भोजन प्राप्त करती है। वह सिखाता है कि विपरित परिस्थितियों में संघर्ष करके ही मनुष्य जी सकता है।

निबंधात्मक प्रश्न–

(i) गंद्याश सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

नाम इसलिए बड़ा नहीं है कि वह नाम है वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। रूप व्यक्ति सत्य है, नाम समाज–सत्य। नाम उस पद को कहते हैं जिस पर समाज की मुहर लगी होती है। आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सेक्शन' कहा करते है। मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा

प्रमाणित, समष्टि–मानव की चित्त–गंगा में स्नात।

उत्तर – **संदर्भ –** प्रस्तुत पंक्तियाँ 'कुटज' नामक ललित निबंध से अवतरित है द्विवेदी जी का यह निबंध हमारी पाठ्य पुस्तक अंतरा (भाग–2) में संकलित है।

प्रसंग– क्या किसी वस्तु का नया नाम रख सकते है? इसलिए लेखक हल निकालता है कि नया नाम दे पाना संभव नहीं क्योंकि नाम से ही पहचान जुड़ी हुई होती है।

व्याख्या – लेखक कहता है इस वृक्ष का नाम मुझे याद नहीं आ रहा आए इसे पहचान पाना भी संभव नहीं हो रहा। इससे यह बात प्रमाणित होती है फि नाम बड़ा है, रूप नहीं। तब लेखक ने सोचा क्यों न इसका नया नामकरण कर दिया जाये। पर मन इसके लिए तैयार नहीं हुआ। नाम को नाम रखने मात्र से महत्ता प्राप्त नहीं होती। नाम को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है। समाज में उसकी पहचान इस नाम से ही है इसलिए नाम बड़ा है। रूप का संबंध व्यक्ति से है किन्तु नाम समाज की सम्पत्ति है। समाज ने ही उसे वह नाम दिया है और समाज उसे उस नाम से ही पहचानता है। इसी को 'सोशल सेक्शन' या सामाजिक स्वीकृति कहा जाता है। यही कारण है कि लेखक का मन इस वृक्ष के उस नाम को जानने के लिए व्याकुल है जो समाज द्वारा स्वीकृत है तथा समाज रूपी मानव की चितरूपी गंगा में स्नान किए हुए है।

विशेष – (i) नाम इसलिए बड़ा है क्योकि उसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त है।

(ii) तत्सम प्रधान शब्दावली।

(iii) विवेचनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

शेखावाटी मिशन–100

अन्तराल भाग–2

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

प्र:1 'सूरदास की झोपड़ी' कहानी प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है?

(अ) गोदान (ब) रंगभूमि

(स) कर्मभूमि (द) गबन **(ब)**

प्र:2 सुभागी किसकी पत्नी थी?

(अ) भैरों की (ब) जगधर की

(स) सूरदास की (द) नायकराम **(अ)**

प्र:3 सुभागी भैरों की मार के डर से कहाँ छिप जाती है?

(अ) खेत में (ब) मेले में

(स) सूरदास की झोपड़ी में (द) कहीं नहीं **(स)**

प्र:4 किस घटना से सूरदास को आत्मग्लानि हुई और वह फूट–फूटकर रोया ?

(अ) झोपड़ी में आग लगने से (ब) पैसे चलें जाने से